अनुराग
बाल पत्रिका

त्रैमासिक
जनवरी-मार्च 2007

मूल्य : 10 रुपए
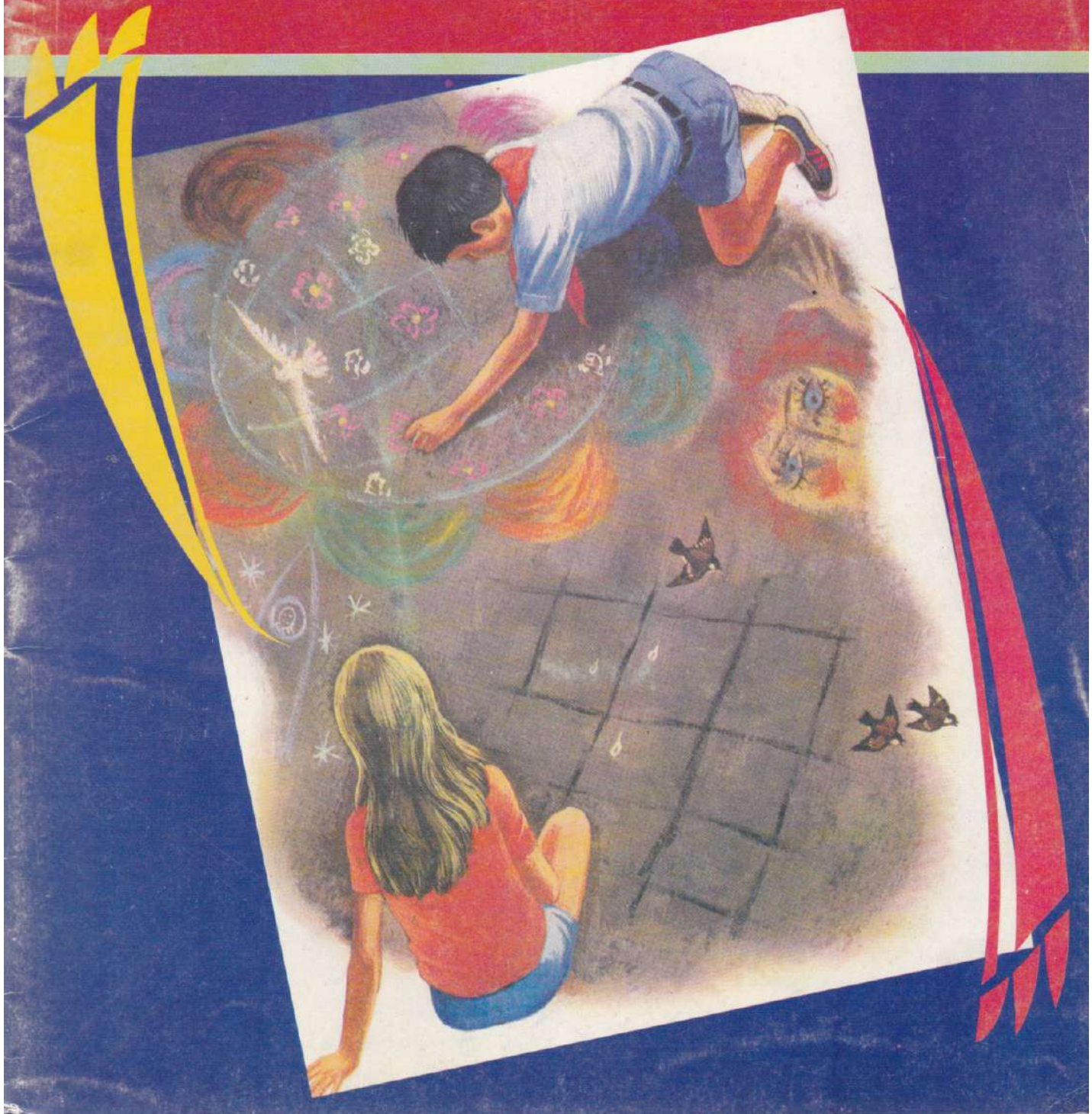
जनवरी-फरवरी-मार्च की कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

23 जनवरी

'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा' का नारा देने वाले क्रान्तिकारी सुभाष चन्द्र बोस का जन्मदिवस।

१ फरवरी (बसंत पंचमी)

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की जयन्ती।

चौरी—चौरा काण्ड, जिसमें अंग्रेजों के जुल्म के खिलाफ जनता के बहादुर सपूतों ने बगावत की आवाज उठाते हुए स्थानीय थाने में आग लगा दी थी।

१० फरवरी

महान कवि व नाटककार बर्टोल्ट ब्रेष्ट की जन्मदिवस।

१८ फरवरी (१९४६)

भारतीय नौसेना के बहादुर नौजवानों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया था जिसे हम नौसेना विद्रोह के नाम से जानते हैं।

१९ फरवरी (१६७३)

महान क्रान्तिकारी वैज्ञानिक कॉपर्निकस का जन्मदिवस। इसे विज्ञान दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

२७ फरवरी

महान क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आज़ाद का शहादत दिवस

८ मार्च

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस।

२३ मार्च

शहीद दिवस (1931)। शहीदे आज़म भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव ने देश की आज़ादी की खातिर आज के दिन ही हँसते—हँसते फाँसी का फंदा चूम लिया था।

—आज ही के दिन पंजाब के क्रान्तिकारी कवि अवतार सिंह 'पाश' को खलिस्तानी आतंकवादियों ने मार दिया था।

२५ मार्च

क्रान्तिकारी पत्रकार, कलम के सिपाही गणेश शंकर विद्यार्थी आज ही के दिन साम्प्रदायिक दंगों को रोकने की कोशिश में शहीद हो गये थे।

२८ मार्च

विश्व प्रसिद्ध महान क्रान्तिकारी लेखक मक्सिम गोर्की का जन्मदिवस (1868)।

भारत के प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष (1857) के नायक मंगल पाण्डे ने आज ही के दिन विद्रोह का बिगुल फूंका था।

अनुराग
बाल पत्रिका

त्रैमासिक, वर्ष 12, अंक 1
जनवरी-मार्च 2007

सम्पादक
कमला पाण्डेय

सह सम्पादक
अभिनव सिन्हा

सज्जा
रामबाबू

स्वत्वाधिकारी कमला पाण्डेय के लिए यशकरण लाल द्वारा डी-68, निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित तथा मुद्रक बाबूराव बोरकर द्वारा शान्ति प्रेस, नयागाँव (पश्चिम), लखनऊ से मुद्रित।

सम्पादकीय कार्यालय
डी-68, निरालानगर
लखनऊ-226020
फोन : (0522) 2786782

इस अंक का मूल्य : 10 रुपए
वार्षिक सदस्यता : 43 रुपए
(डाक व्यय सहित)

इस अंक में

संवाद

प्यारे बच्चो/नन्हे दोस्तो

शायद तुमने निठारी का नाम सुना होगा। टीवी पर, अखबारों में निठारी की भयानक तस्वीरें देखकर और वहाँ की दिल दहला देने वाली सच्चाई जानकर शायद तुम भी सिहर उठे होगे।

दिल्ली के पास नोएडा शहर के एक करोड़पति और उसके नौकर ने मिलकर न जाने कितने बच्चों को बहुत भयानक तरीके से मार डाला। कई हफ्तों तक उस खूनी कोठी के आस-पास से बच्चों की हड्डियाँ, कपड़े और जूते मिलते रहे। मारने से पहले इन बच्चों के साथ भयानक अत्याचार किया जाता था। यह भी कहा जा रहा है कि उनके शरीर के अंगों को निकालकर बेच दिया जाता था।

महीनों से उस कोठी के पास निठारी गाँव में रहने वाले लोगों के बच्चे गायब हो रहे थे लेकिन उनके माँ-बाप की शिकायत कोई नहीं सुनता था। तुम्हें याद होगा, कुछ दिन पहले नोएडा में ही एक विदेशी कम्पनी के करोड़पति अफसर का बच्चा गायब हो गया था, तो पूरी सरकार उसको ढूँढ़ने में लग गयी थी। तीन दिन में ही वह बच्चा वापस घर पहुँच गया था।

लेकिन निठारी के बच्चे इतने खुशकिस्मत नहीं थे। क्योंकि उनके माँ-बाप गरीब थे। ये वे लोग हैं जो कारखानों में काम करते हैं जहाँ हमारी-तुम्हारी जरूरत की सारी चीजें बनती हैं, जो घरों में काम करते हैं, जो हमारी जरूरत के सामान लेकर गलियों में घूमते हैं या सड़कों के किनारे ठेला लगाते हैं, जो वे इमारतें खड़ी करते हैं जिनमें तुम रहते हो या पढ़ने जाते हो। इन लोगों की बदौलत ही यह दुनिया चल रही है। लेकिन इन लोगों की आवाज कहीं नहीं सुनी जाती। इसीलिए उनके बच्चे गायब होते रहे पर किसी के कान पर जूँ नहीं रेंगी। जब वे गरीब माँ-बाप अपने बच्चों के गायब होने की रिपोर्ट लिखने पुलिस के पास जाते थे तो उन्हें गालियाँ देकर भगा दिया जाता था।

आखिरकार उस खूनी कोठी का मालिक और उसका विकृत दिमाग वाला नौकर पकड़े गये। लेकिन वे अकेले नहीं हैं। इस समाज में ऐसे बहुत से लोग हैं जो बच्चों के साथ घिनौने अत्याचार करते हैं। ऐसे कुछ लोग पकड़े भी जाते हैं लेकिन यह सिलसिला बन्द नहीं होता। हमारे देश से ही हर साल लाखों बच्चे गायब हो जाते हैं। इनमें से कुछ को तो दूसरे देशों में ले जाकर बेच दिया जाता है। बहुत से बच्चों को गन्दे काम करने के लिए मजबूर किया जाता है। बहुतों से भीख मँगवाई जाती है। ये सारी बातें खबरों में नहीं आतीं।

सरकार ने बाल मज़दूरी खत्म करने का कानून बना दिया है। लेकिन लाखों बच्चे आज भी कारखानों में खतरनाक काम कर रहे हैं, होटलों और ढाबों में भोर से रात तक जूठी प्लेटें धो रहे हैं, घरों में काम कर रहे हैं, सड़कों पर भीख माँग रहे हैं। कैसा है ये समाज जो अपने बच्चों के साथ इस तरह का सलूक करता है? घर में, स्कूल में, हर जगह बताया जाता है कि बच्चे ही देश का भविष्य होते हैं। जो समाज अपने भविष्य के साथ ऐसा बरताव करेगा उसका भविष्य भला कैसा होगा!

तुम सोच रहे होगे, नानी इस बार ये कैसी बातें रही है? बच्चों के साथ तो अच्छी-अच्छी बातें ही करनी चाहिए। मैं भी यही चाहती हूँ कि बच्चों की जिन्दगी में बस सुन्दरता ही हो, मिठास हो, तकलीफ न हो। लेकिन अगर समाज के तीन-चौथाई बच्चे भूख, गरीबी और डर में जीते रहेंगे तो बाकी बच्चे खुश कैसे होंगे। समाज ऐसा बनाना होगा जिसमें सारे बच्चे बिना किसी डर के जी सकें। सारे बच्चे पढ़ने जा सकें। सारे बच्चे जी भरकर खेल सकें। किसी बच्चे को उसकी माँ की गोद से छीना ना जा सके। सारे बच्चों को बराबर प्यार और खुशियाँ मिलें।

जब ऐसा समाज बनेगा तभी निठारी जैसी डरावनी घटनाएँ बन्द होंगी।

प्यार सहित!

तुम्हारी नानी,
कमला पाण्डेय

नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे

—सुन यओच्युन

किसी समय फिङफिङ नाम की एक छोटी-सी लड़की के पास कपड़े का एक नन्हा गुड्डा था, जिसका नाम था गुदड़ीलाल। बच्चो, क्या तुम जानना चाहते हो कि इस गुड्डे ने नया कोट कैसे पहना व उसे गुस्सा क्यों आया? इस सवाल का जवाब तुम्हें इस लम्बी कहानी में मिलेगा।

अब तक पढ़ा...

दूसरे दिन नया साल आ गया था। सभी बच्चे खुशी से नये साल का स्वागत गाते बजाते हुए कर रहे थे। नये साल में सभी बच्चे खुश थे। क्योंकि उन्हें खिलौने भी मिले थे। तओतओ को नन्हा गुदड़ीलाल मिला था, पर गुदड़ीलाल को पाकर वह दुःखी था। वह फिङफिङ की प्यारी सी गुड़िया चाह रहा था। अध्यापिका श्याओ ने फिङफङ की गुड़िया, तओतओ को दिला दी। गुदड़ीलाल को लेकर फिङफिङ घर गई तथा उसे अपने पिताजी से मिलवाया। गुदड़ीलाल से मिलकर उसके पिताजी अत्यन्त प्रसन्न हुए। फिङफिङ को पिता ने एक खिलौना ट्रेन दी। फिङफिङ ने गुदड़ीलाल की ट्रेन की ड्राइवर सीट पर बैठा दिया। पहले गुदड़ीलाल को ट्रेन चलाने में बहुत डर लगा किन्तु बाद में वह प्रसन्न था क्योंकि उसने ट्रेन बहुत ही आसानी से चला ली थी। रात में गुदड़ीलाल ने परिवार के सभी सदस्यों के साथ खाना खाया। आज से वह इस परिवार का सदस्य हो गया था।

अब आगे...

गुदड़ीलाल ने नया कोट पहना

रात हो चुकी थी। बिजली की बत्तियाँ जल चुकी थीं। गुदड़ीलाल के सोने का समय हो गया था। फिङफिङ ने गुदड़ीलाल को टेबिललैम्प के शेड के नीचे बिठा दिया। टेबिल-लैम्प का शेड काफी बड़ा था। वह नन्हे गुड्डे के कमरे जैसा लग रहा था। फिङफिङ ने लकड़ी के कुछ ब्लाक जोड़कर एक पलँग बना दिया और उस पर एक रूमाल चादर की तरह बिछा दिया। साथ ही छोटी-छोटी थैलियों में रूई भरकर गुड्डे के लिए गद्दा, लिहाफ और तकिया भी बना लिया। पूरा बिस्तर तैयार करने के बाद वह गुदड़ीलाल से बोली : "यह है तुम्हारा सोने का कमरा, तुम्हारा पलँग, तुम्हारा बिस्तर!"

फिङफिङ ने गुदड़ीलाल को पलँग पर लिटाकर लिहाफ से अच्छी तरह लपेट दिया।

"अब आराम से सो जाओ," वह बोली। "रात को अच्छी तरह सोने के बाद कल सुबह हम जल्दी उठ जाएँगे। हाथ-मुँह धोने के बाद मैं तुम्हें अपने साथ शिशुशाला ले जाऊँगी।"

गुदड़ीलाल पलँग पर लेटकर बड़ा खुश हुआ। वह **सचमुच कितना** भाग्यशाली था! उसे कितना अच्छा घर **मिल गया** था! फिडफिड के माता-पिताभी उसे बहुत पसन्द थे। दोनों का स्वभाव बहुत अच्छा था। लेकिन फिडफिड उसे सबसे अच्छी लगती थी। उसे बाकी लड़कियों की तरह फूल, पाउडर आदि चीजें पसन्द नहीं थीं। उसके पास बहुत से ऐसे मशीनी खिलौने थे जो लड़कों को पसन्द होते हैं। उस दिन फिडफिड ने गुदड़ीलाल के साथ अनेक ऐसे खेल खेले जिन्हें अक्सर लड़के पसन्द करते हैं। वे खेल गुदड़ीलाल को भी पसन्द थे। हालाँकि वह कपड़े का एक नन्हा-सा गुड्डा था, पर था तो एक लड़का ही।

पूरा दिन हँसते-खेलते बीत गया था। इसलिए गुदड़ीलाल काफी थक गया था। फिर पिछली रात वह अच्छी तरह सो भी नहीं पाया था। इसलिए गरम-गरम बिस्तर पर लेटते ही उसकी आँख लग गई।

सुबह गुदड़ीलाल जल्दी उठ गया। वह फिडफिड के साथ शिशुशाला जाना चाहता था। वहाँ बहुत से बच्चे होंगे। हो सकता है, उसकी मुलाकात काले भालू, बन्दर या बाघ से भी हो जाए। एक ही दिन में उसे उनकी याद सताने लगी थी, हालाँकि उसे डर था कि ये जानवर कहीं उसे डरपोक कहकर फिर न चिढ़ाने लगें। कमरे में कुछ गरमी थी, पर बाहर ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही थी और पेड़ों से लगातार साँय-साँय की आवाज़ आ रही थी।

फिडफिड गुदड़ीलाल का बड़ा ख्याल रखती थी। वह शिशुशाला जाने के लिए तैयार खड़ी थी। अचानक उसने पिताजी से पूछ लिया : "पापा, क्या एक हल्की-सी जाकिट पहनकर बाहर जाने से ठण्ड तो नहीं लग जाएगी?"

पहले पिताजी उसकी बात नहीं समझ पाए, क्योंकि फिडफिड ने एक गरम कोट पहन रखा था। लेकिन ज्योंही उनकी नजर गुदड़ीलाल पर पड़ी, उन्हें सारी बात समझ में आ गई।

"तुम बिल्कुल ठीक कह रही हो," उन्होंने कहा। "जाड़ों में केवल हल्की जाकिट पहनकर बाहर निकलने से ठण्ड लग सकती है।"

"पापा, क्या आप गुदड़ीलाल के लिए एक अच्छा-सा कोट बना सकते हैं?"

"मैं?" पिताजी नेसिर हिलाकर असमर्थता व्यक्त की। "यही एक ऐसा काम है जिसे मैं नहीं कर सकता।"

यह सच था। फिडफिड के ाजी हालाँकि कारखाने के एक ल कारीगर थे, फिर भी सिलाई नी उन्हें नहीं आती थी।

"अगर हमें कोई काम न ए, तो क्या हमें उसे मेहनत ीखने की कोशिश नहीं करनी हेए?" फिडफिड बोली।

"तुम्हारी बात बिल्कुल ठीक मुझे सीना-पिरोना सीख लेना हेए!" पिताजी ने कहा। "मैं शिश करूँगा। लेकिन ाहाल मुझे एक मीटिंग में ा है। वहाँ मुझे समय पर वना चाहिए। क्या यह काम तुम अपनी माँ से नहीं करा सकती?"

पिताजी ने मुस्कराते हुए माँ की तरफ देखा और बोले : "क्या ख्याल है? क्या इस काम में तुम फिडफिड की मदद नहीं करोगी?"

"कोट बनाने की कोई जरूरत नहीं है!" माँ ने कहा। "तुम इस लड़की को बिगाड़ रहे हो। फिडफिड, तुम्हारे पास एक छोटा-सा गरम स्कार्फ भी तो है। गुदड़ीलाल को उसी में क्यों नहीं लपेट लेती?"

पिताजी ने देखा कि फिडफिड इस सुझाव से खुश नहीं है।
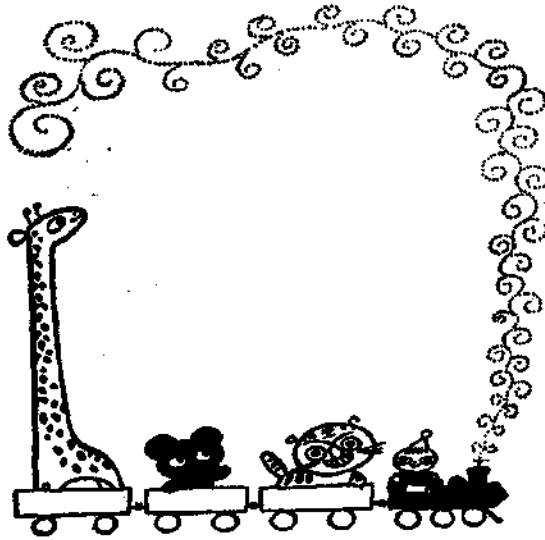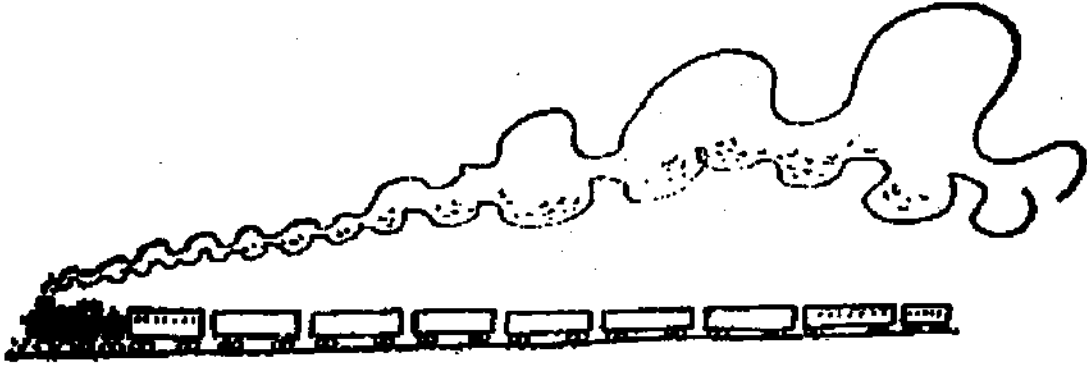
"अच्छा, तो एक काम करते हैं। वोट लेकर देख लेते हैं!" उन्होंने राय पेश की। "जो लोग यह चाहते हैं कि माँ को गुदड़ीलाल के लिए कोट बनाना चाहिए वे अपना हाथ खड़ा कर लें।"

यह कहकर पिताजी ने एकदम अपना हाथ खड़ा कर दिया। फिङफिङ ने भी हाथ खड़ा कर दिया। मगर माँ ने अपना हाथ नीचे ही रखा।

"ठीक है," पिताजी ने कहा, "अल्पमत को बहुमत की बात माननी पड़ेगी!"

माँ हँसी नहीं रोक पाई। कोट बनाने के लिए कपड़ा ढूँढ़ते हुए वह बुदबुदाई : "तुम दोनों के राज में मेरी कौन सुनता है!"

आखिरकार नया कोट तैयार हो गया। उसे पहनकर गुदड़ीलाल शिशुशाला गया। कोट गहरे रंग के कॉड्राय के कपड़े से बनाया गया था। वह बहुत गरम, मुलायम और सुन्दर था। उसे पहनकर गुदड़ीलाल बड़ा खुश हुआ।

गुदड़ीलाल का गुस्सा

फिङफिङ और गुदड़ीलाल शिशुशाला से खुशी-खुशी घर लौटे। यह देखकर माँ को भी बड़ी खुशी हुई। लेकिन शाम का भोजन करते समय एक अप्रिय घटना घटी।

शाम का खाना खाते समय फिङफिङ ने गुदड़ीलाल का नया कोट उतार दिया, फिर उसे सोयासॉस की बोतल के मुँह पर बिठा दिया। बोतल मेज के बीचोंबीच रखी हुई थी।

"तुम कुछ नहीं खाते। इसलिए अच्छा यह होगा कि

तुम इस बोतल के मुँह पर चुपचाप बैठे रहो ओर हमें देखते रहो!" वह बोली।

सोयासॉस की बोतल काफी लम्बी और सँकरी थी। गुदड़ीलाल ने नीचे देखा, तो उसका सिर चकराने लगा। उसने मन ही मन सोचा : "हाय माँ, मैं कितनी ऊँचाई पर बैठा हुआ हूँ!" बोतल हिलती नजर आ रही थी। वह गिरने से बहुत घबराता था। ठीक से बैठने के लिए वह ज्योंही कुछ हिला, सन्तुलन खोकर पीछे की तरफ लुढ़क गया और बोतल से नीचे गिर पड़ा। गिरते ही उसके मुँह से एक चीख-सी निकली।

गुदड़ीलाल फिङफिङ के चावल के कटोरे में गिर पड़ा। बहुत से चावल मेज पर बिखर गए। फिङफिङ बहुत घबरा गई।

उसने जल्दी-जल्दी चावल समेट लिए और नाराज होकर गुदड़ीलाल से बोली : "तुमने यह अच्छा नहीं किया, गुदड़ीलाल। जरा देखो तो, तुमने कितने सारे चावल बर्बाद कर दिए! किसान कितनी मेहनत से चावल पैदा करते हैं। हमें चावल का एक भी दाना बर्बाद नहीं करना चाहिए। कल शाम पापा ने हमें बताया था कि अच्छे बच्चे चावल का एक भी दाना बर्बाद नहीं करते।"

फिङफिङ ने गुदड़ीलाल को फिर सोयासॉस की बोतल के मुँह पर बिठाते हुए कहा : "इस बार तुम अच्छी तरह बैठना। अगर फिर गिरे, तो मैं तुम्हारे साथ नहीं खेलूँगी।"

गुदड़ीलाल बोतल के मुँह पर बैठा-बैठा सोच रहा था : "कमाल हो गया है! पहले मैं जरा भी बहादुर नहीं था। गिरने से बहुत डरता था। इस बार तो ऊपर से गिरने में मुझे ज्यादा डर महसूस नहीं हुआ। उल्टे मजा आया! मैं एक बार और ऊपर से गिरना चाहता हूँ। इससे मेरी हिम्मत और बढ़ जाएगी और मैं बन्दर की तरह छलाँग लगा सकूँगा। अब मैं किसी चीज से नहीं डरता। मैं ऊँचाई से नहीं डरता, गिरने से नहीं डरता, यहाँ तक कि फिङफिङ से भी नहीं डरता।"

गुदड़ीलाल कुछ आगे की ओर झुका और कूद पड़ा। उसके कूदते ही मेज पर पड़ा सारा सामान अस्तव्यस्त हो गया। गुदड़ीलाल ने कूदते समय इतना जोर लगाया कि सोयासॉस की बोतल भी लुढ़क गई। वे दोनों ही फिङफिङ के चावल के कटोरे से टकराए। कटोरा नीचे गिर पड़ा। चावल फर्श पर बिखर गए।

इस बार फिङफिङ बहुत गुस्से में आ गई। उसका चेहरा तमतमा उठा। अध्यापिका श्याओ अक्सर बच्चों

को बताती रहती थी कि चावल का एक-एक दाना पैदा करने के लिए किसानों को कितनी मेहनत करनी पड़ती है। नए साल के मौके पर पिताजी ने फिङफिङ को बताया था कि चीन को एक शक्तिशाली समाजवादी देश बनाने के लिए ढेर सारे अनाज की आवश्यकता है। पर इस बेवकूफ गुदड़ीलाल ने तो कटोरे के सारे चावल बर्बाद कर दिए थे।

फिङफिङ ने गुदड़ीलाल को उठाकर पढ़ाई की मेज पर रख दिया और फटकार सुनाती हुए बोली : "तुम सचमुच निहायत बेवकूफ हो! तुमने मेरी बात नहीं मानी और सारे चावल बर्बाद कर डाले!"

फिङफिङ को गुस्से में देख गुदड़ीलाल का भी पारा चढ़ गया। उसे फिङफिङ से यह उम्मीद नहीं थी कि इस छोटी-सी गलती के लिए वह उसे इतनी डाँट-फटकार लगाएगी। थोड़े से चावल गिर गए, तो कौन सी आफत आ गई? गुस्सा दिखाने के लिए वह पढ़ने-लिखने की मेज पर लेट गया, यह सोचकर कि फिङफिङ उसे जरूर उठा लेगी।

लेकिन फिङफिङ ने उसकी तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। उसने अपनी माँ के साथ मिलकर चावल का एक-एक दाना फर्श से उठाकर कटोरे में डाल दिया। माँ ने चावल के दानों को उबलते पानी से धोया ओर फिर एक बार फिङफिङ को परोस दिया।

खाना खाने के बाद, फिङफिङ टेबिल-लैम्प के पास जाकर किताब पढ़ने लगी। उसने गुदड़ीलाल की तरफ देखा ही नहीं। यह देखकर गुदड़ीलाल का पारा चढ़ता गया।

पर जब सोने का समय आया, तो फिङफिङ ने गुदड़ीलाल को पलँग पर लिटा दिया और उसे लिहाफ में लपेटती हुई बोली : "गुदड़ीलाल, बाद में ऐसा न करना। मैं तुम्हें फिर एक बार याद दिलाना चाहती हूँ कि चावल का एक-एक दाना बड़ा कीमती है। हमें चावल का एक भी दाना बर्बाद नहीं करना चाहिए।"

पर गुदड़ीलाल उसकी बात मानने को बिल्कुल तैयार नहीं था। " 'कीमती' से क्या मतलब है?" वह मन ही मन सोचने लगा। "यह लड़की अकारण ही तिल का ताड़ बना रही है। ठीक है, अब मैं भी उसके साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखूँगा।"

फिङफिङ ने जब यह देखा कि गुदड़ीलाल अब भी गुस्से में है, तो उसे हँसी आ गई। "गुदड़ीलाल, जरा इधर तो देखो," उसने कहा। "इतनी नाराजगी क्यों दिखा रहे हो? मैं मानती हूँ कि मैंने भी गलती की है। मुझे इतना गुस्सा नहीं दिखाना चाहिए था। फिर भी तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि....।"

"यह फिर मुझे नसीहत देने लगी है। मैं इसकी बात हरगिज नहीं सुनूँगा।" गुदड़ीलाल मन ही मन बोला। "मैं इसकी बात हरगिज नहीं सुनूँगा। मैं कान बन्द कर लेता हूँ। बाघ और बन्दर बिल्कुल ठीक कहते हैं कि लड़कियाँ अच्छी नहीं होतीं। वे अक्सर तिल का ताड़ बना देती हैं। अगर मैं किसी लड़के के साथ होता, तो निश्चय ही ऐसी बात न होती। इतनी छोटी-सी बात के लिए वह लड़का मुझ पर इतना गुस्सा हरगिज न दिखाता। मैं यहाँ से चला जाऊँगा! दूर चला जाऊँगा! तओतओ के पास चला जाऊँगा! हालाँकि वह मुझे पसन्द नहीं करता, फिर भी वह एक लड़का तो है।"

(शेष अगले अंक में जारी)

नन्हे आर्थर का सूरज

—हधाक ग्युलनज़रयान

दादी को शिशिर ऋतु अच्छी नहीं लगती थी। लेकिन नन्हे आर्थर को उस समय खूब मजा आता था। दादी को शिशिर इसलिए अच्छा नहीं लगता था क्योंकि उस समय बारिश होती थी, जिससे उसके पैर की तकलीफ बढ़ जाती थी।

आर्थर को शिशिर ऋतु बहुत पसन्द थी। ये मौसम तरह-तरह की बढ़िया चीजें लेकर आता था। खुबनियाँ और अंगूर, सेब और नाशपातियाँ। और माँ इन फलों से तरह-तरह के 'विटमिन' बनाती थी।

रोज सुबह वह पापा से कहती थी : 'मेसरोप, बाजार जाकर कुछ सेब और अंगूर ले आइए : बच्चे को विटामिनों की जरूरत है।'

पापा जाकर सेब, नाशपातियाँ और एक-दो अनार ले आते थे।

आर्थर को शिशिर ऋतु और भी अच्छी लगने लगी थी।

लेकिन दादी को नहीं। दादी को विटामिनों की जरूरत नहीं थी। लगता है, बड़े लोगों को विटामिनों की जरूरत नहीं होती। लगता था कि बड़े लोग बस मजे के लिए फल खाते थे। उनके लिए ये बस सेब, नाशपाती और अंगूर थे, विटामिन नहीं थे।

बाहर हल्की बारिश हो रही थी और दादी भीतर चारपाई पर लेटी थी। वह घुटने मोड़े हुए पड़ी थी और धीरे-धीरे कराह रही थी, 'उफ, उफ, उफ।'

आर्थर उसके पास गया।

"दादी, मेरी बात सुन रही हो, दादी?"

"क्या बात है, बालिक-जान?" वह बोली।

"तुम्हारे पैर में फिर से दर्द हो रहा है न?" आर्थर ने पूछा।

"हाँ, प्यारे," वह बस इतना ही बुदबुदाई।

आर्थर ने दादी को एक सन्तरा दिया।

"लो, ये विटामिन खा लो, तुम्हारी तकलीफ दूर हो जाएगी," उसने कहा।

दादी मुस्कुराई। वह बोली, "तुम खा लो, बालिक-जान। सन्तरों से मुझे फायदा नहीं होगा। मुझे धूप चाहिए, लेकिन सूरज तो बादलों के पीछे छिप गया है, बदमाश कहीं का।"

नन्हा आर्थर बादलों से बहुत गुस्सा था। उसने अपने छोटे कुत्ते कोटोट को बिस्तर के नीचे से बुलाया, अपनी खिलौना-बन्दूक उठायी और छत पर चला गया।

उसने कोटोट से कहा, "तू इन बादलों पर भौंक और मैं अपनी बन्दूक से उन पर गोली चलाऊँगा।"

कोटोट एक-दो बार भौंका लेकिन जोर से नहीं। वह समझ रहा था कि आर्थर उसके साथ खेलना चाहता है, इसलिए वह खुशी से भौंक रहा था। ऐसी भौं-भौं से भी भला कोई बादल डरता?

लेकिन आर्थर ने कोटोट की भौं-भौं पर ध्यान ही नहीं दिया। वह बड़े गुस्से से बादलों को घूरते हुए अपनी बन्दूक से गोलियाँ दाग रहा था, और चिल्ला रहा था : "लो, ये लो, मजा आया? और छिपाओगे सूरज को? ये लो, धायँ, धायँ, धायँ।"

वह गोलियाँ चलाता रहा, जब तक कि धायँ, धायँ, धायँ चिल्लाते-चिल्लाते उसका मुँह नहीं दर्द करने लगा।

उस समय तक बादल थोड़ा डर गये थे और बारिश रुक गयी थी, फिर भी सूरज नहीं निकला था।

"ओह, मेरी बन्दूक इतनी छोटी है, इसीलिए पूरा असर नहीं हो रहा है," आर्थर ने सोचा।

अगर आर्थर के पास वैसी तोप होती जैसी राचिक के पास थी तो बस, वह एक धमाका करता और सारे बादल भाग जाते।

लेकिन आर्थर के पास तोप नहीं थी, और राचिक का घर दूर था। अब कुछ नहीं किया जा सकता था और आर्थर उदास होकर कमरे में लौट आया। वह दादी के पास बैठ गया।

"दादी, मेरी बात सुन रही हो, दादी?"

"अब क्या है बालिक-जान?" दादी ने पूछा।

"मैं बादलों को थोड़ा-सा ही डरा पाया। बारिश तो रुक गयी, लेकिन सूरज अब भी छिपा हुआ है। मेरे पास तोप नहीं है न, और बादल मेरी बन्दूक से डरते ही नहीं हैं।"

दादी मुस्कुराई।

"कोई बात नहीं मेरे प्यारे," वह बोली। "लेकिन देखो, तुमने बादलों को डराकर बारिश तो बन्द करा दी। मेरी तबियत थोड़ी बेहतर हो गयी है, अब मेरे पैर में बिल्कुल दर्द नहीं हो रहा है। मैं तुम्हारे पिताजी से कहूँगी कि तुम्हारे लिए एक तोप ले आयें। फिर तुम सारे बादलों को भगा सकोगे।"

"दादी, क्या वाकई तुम्हारी तबियत अच्छी हो गयी है?" आर्थर ने फिर पूछा।

"हाँ, अब मुझे काफी बेहतर लग रहा है। लगता है आधा दर्द चला गया है।"

"दादी!" अचानक आर्थर उछलकर बोला। "मैं समझ गया कि क्या करना चाहिए। अब तुम्हारा बाकी आधा दर्द भी भगा दूँगा।"

दादी ने मुस्कुराकर पूछा, "बिना तोप के तुम कैसे करोगे?"

"बस देखती जाओ," वह बोला। "मैं अभी इसे भगा दूँगा। कसम से, बिल्कुल भगा दूँगा। अम्मा, सुनो अम्मा!"

"क्या बात है बेटे?" रसोई से माँ की आवाज आयी।

"मुझे कुछ कागज चाहिए।"

"पापा की मेज से ले लो," माँ ने कहा।

पापा की मेज पर कागजों का एक मोटा गट्ठर रखा था। पहले आर्थर ने एक साफ कागज लिया फिर उसने एक मोटी लाल पेंसिल उठाई। उसने कागज को फर्श पर रखा, पेट के बल लेट गया और तस्वीर बनाने लगा। वह पूरा जोर और मन लगाकर काम में जुटा हुआ था और उसकी जीभ बाहर निकली थी। उसने एक बड़ा-सा लाल-लाल सूरज बनाया। वह इतना बढ़िया सूरज था कि उसकी गरमी से आर्थर के चेहरे पर पसीना आ गया।

आखिरकार, सूरज तैयार हो गया। आर्थर ने अपने चारों ओर कूद-फाँद मचा रहे कोटोट को वहाँ से भगा दिया ताकि वह बदमाश अपने गन्दे पंजे सूरज पर न रख दे। फिर वह सूरज को लेकर दादी के पास गया।

"दादी, मेरी बात सुन रही हो?"

"क्या बात है बाबू?" वह बुदबुदाई।

"देखो, मैंने तुम्हारे लिए सूरज बनाया है।"

दादी ने सूरज को देखा और मुस्कुराई।

"अरे, कितना प्यारा सूरज है," उसने खुश होकर कहा। "ओहो, और ये कितना गरम है। लाओ, इसे मेरे पैर के पास रख दो।"

दादी ने सूरज को लेकर अपने दुख रहे पैर के पास रख लिया।

"हाँ, ये है सूरज। जानते हो, मेरे पैर का दर्द बिल्कुल ठीक हो गया। दादी को किसने ठीक किया? आर्थर ने।"

दादी ने अपने पोते की पप्पी ली, फिर मुस्कुराई, फिर उसकी पप्पी ली, फिर और मुस्कुराई और बार-बार खुश होकर नन्हे आर्थर की पप्पी लेती रही, तब तक जब तक कि उसे सुस्ती आने लगी और वह आर्थर के सूरज को पैर पर रखे हुए सो गयी।

शाम होते-होते दादी के पैर में बिल्कुल दर्द नहीं रह गया। बेशक, आर्थर का सूरज सरककर फर्श पर जा गिरा था, और बेवकूफ कोटोट कई बार सूरज पर अपने गन्दे पंजे रख चुका था, लेकिन दादी ठीक हो चुकी थी।

शाम को पापा ने दादी से पूछा कि उसकी तबियत कैसी है।

"बहुत अच्छी, आर्थर के सूरज ने मुझे ठीक कर दिया।"

पापा कुछ समझे नहीं। लेकिन दादी ने उन्हें सारी बात बता दी।

आर्थर ने खुशी से नाक खुजाई।

हमेशा ऐसा ही होता था। जब आर्थर खुश होता था तो उसकी नाक में खुजली होने लगती थी। और तब भी जब वह रोता था।

आज आर्थर अपने आप से बहुत खुश था। उसने इतनी अच्छी तरह व्यवहार किया कि पापा ने कहा कि आर्थर दूसरे बच्चों के लिए एक उदाहरण है। आर्थर खुश होकर सोने चला गया।

आर्थर का सूरज फर्श पर पड़ा था और सूरज के ऊपर, पेट के बल कोटोट लेटा हुआ था। आर्थर उस पर चिल्लाया :

"ओय कोटोट, सूरज के ऊपर कोई कैसे सो सकता है? तेरा पेट जल जायेगा। उठ वहाँ से!"

मुसीबत का साथी

सेर्गेई मिखाल्कोव

विशालकाय भालू एक नन्हे खरगोश को बिना वजह धकियाता रहता था। एक दिन उसने उसे पकड़ा और उसके कान पर एक घूँसा जड़ दिया, खरगोश का एक कान मुड़ा ही रह गया।

बेचारा खरगोश लगातार रोता रहा। आखिरकार उसके कान दुखने बन्द हो गए और उसके आँसू भी सूख गए, लेकिन फिर भी वह आहत महसूस कर रहा था। आखिर उसने किया क्या था? भालू से वह फिर कभी निपट लेगा! काश उसके कान ना चोटिल हुए होते! लेकिन वह मदद के लिए किसके पास जायेगा? भालू जंगल का सबसे ताकतवर जानवर था। भेड़िया और लोमड़ी उसके बहुत अच्छे दोस्त थे, वे हमेशा भालू का ही साथ देंगे।

"कौन मेरी मदद कर सकता है?" खरगोश ने आहें भरते हुए कहा।

"मैं कर सकता हूँ।" किसी ने चिल्लाकर कहा। खरगोश ने अपनी बाँयी आँख उठाई और उसे एक मच्छर दिखा।

"तुम कैसे मदद कर सकते हो?" उसने कहा। "तुम भालू का क्या बिगाड़ सकते हो? वह बहुत बड़ा है और तुम बहुत ही छोटे। तुम इतने ताकतवर भी नहीं हो।"

"बस देखते जाओ!" मच्छर ने कहा।

भालू पूरे दिन गर्म जंगल में मारा-मारा फिर रहा था। वह बहुत थका और अलसाया हुआ था और रसभरी के पेड़ के नीचे आराम करने बैठ गया। लेकिन जैसे ही उसने अपनी आँखें बन्द की उसे अपने कान में कोई भनभनाहट सुनाई पड़ी : "भन-भन-भन-भन!"

भालू समझ गया कि यह मच्छर गा रहा है। उसने अपनी साँस रोक ली और इन्तजार करने लगा कि कब मच्छर उसकी नाक पर बैठे। मच्छर उसके चारों ओर मँडराता रहा और आखिरकार भालू की नाक के एकदम सिरे पर बैठ गया। भालू अपने बायें पंजे पर उछला और
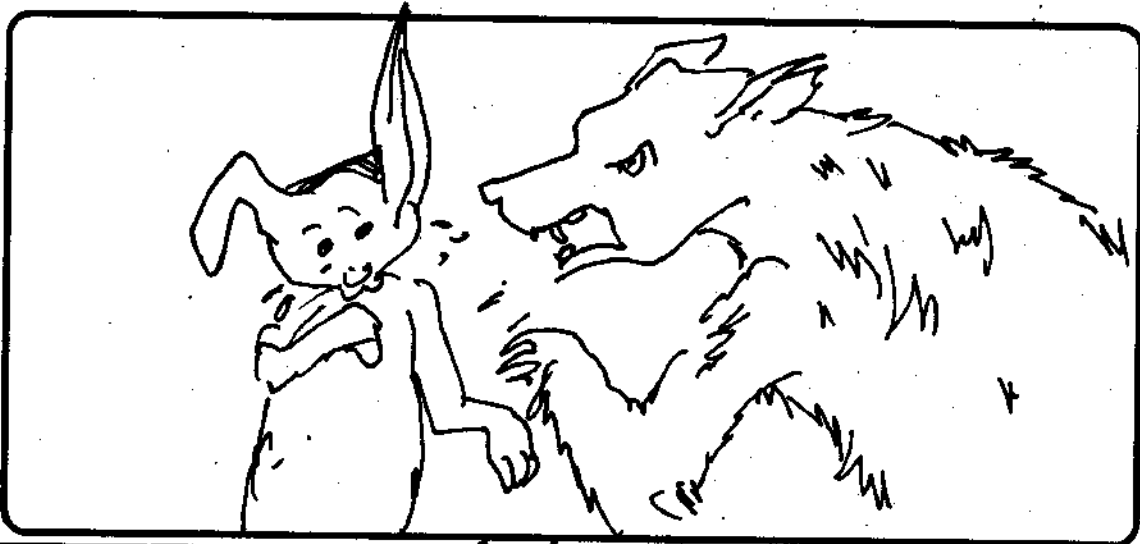
अपनी नाक पर एक तमाचा मारा अब जरूर मच्छर को एक सबक मिलेगा।

भालू अपनी दाहिनी ओर झुका, आँखें बन्द की और बस जम्हाई ले ही रहा था कि उसे फिर भनभनाहट सुनाई पड़ी "भन-भन-भन-भन!"

मच्छर उस समय दूर जा चुका होगा! भालू ने अपनी साँस रोकी और सोने का नाटक करता हुआ वहीं पड़ा रहा, जबकि वह पूरे समय ध्यान लगाये हुए था और ताक में था कि मच्छर अब किस नई जगह पर बैठता है। मच्छर भनभनाता रहा, भनभनाता रहा फिर अचानक रुक गया।

"क्या बात है!" भालू ने खुद से कहा और अँगड़ाई ली। लेकिन मच्छर एकदम धीरे से भालू के कान पर बैठा और अन्दर रेंगता चला गया। वह उसे कैसे मारे? भालू उछल पड़ा। उसने अपने दाँयें पंजे पर उछलकर अपनी ही कान पर इतनी जोर का थप्पड़ मारा कि उसे दिन में तारे नजर आने लगे! अब मच्छर से हमेशा के लिए फुरसत हो गई।

भालू ने अपने कान को रगड़ा और आराम से बैठ गया। अब वह सो सकेगा, लेकिन जैसे ही उसने अपनी आँखें बन्द की, उसे फिर वही पुरानी भनभनाहट सुनाई पड़ी, "भन-भन-भन-भन!"

अब और नहीं! कैसा दुष्ट कीड़ा है!

भालू बड़बड़ाता हुआ उठा और उस जगह से भाग गया जहाँ वह मच्छर के शिकंजे में था। वह लड़खड़ाता हुआ झाड़ियों को पार करता जा रहा था और इतनी जोर से जम्हाई ले रहा था कि उसके जबड़े कड़कड़ाने लगते थे। लगभग सोता हुआ वह भागा जा रहा था, लेकिन मच्छर उसके ठीक पीछे था—"भन-भन-भन-भन!"

भालू दौड़ने लगा। वह तब तक दौड़ता रहा जब तक कि बुरी तरह थककर झाड़ी के नीचे नहीं गिर पड़ा। वहीं लेटकर वह जोर-जोर से साँस लेने लगा और अपने कान को मच्छर के हवाले छोड़ दिया।

जंगल एकदम शान्त, घनघोर अँधेरा! सारे जानवर और पक्षी मजे से खर्राटे ले रहे थे। केवल भालू जग रहा था। थककर लगभग वह बेहोशी की हालत तक पहुँच गया था।

"क्या मुसीबत है!" भालू ने खुद से कहा। इस बेवकूफ मच्छर ने मुझे इतना उलझा दिया कि मैं अपना नाम तक भूल गया हूँ। मैं खुश हूँ कि खुद को बचा पाया। अन्ततः अब मैं थोड़ा सो सकता हूँ।

भालू एक लम्बी भूरी झाड़ी के अन्दर चढ़ गया। उसने अपनी आँखें बन्द की और ऊँघने लगा। वह सपना देखने लगा कि वह जंगल में। अचानक उसकी नजर मधुमक्खी क छत्ते पर पड़ी, जो पूरी तरह शहद से भरा हुआ था। वह अभी मधुमक्खी के छत्ते को अपने पंजे से पकड़ने ही जा रहा था कि फिर उसे वही भनभनाहट सुनाई पड़ी : "भन-भन-भन-भन!"

मच्छर ने उसे पकड़ लिया और आखिरकार उसे जगा दिया।

भालू बैठ गया और कराहने लगा। इस दौरान मच्छर उसके सिर के चारों ओर गोल-गोल घूमता रहा। कभी एकदम पास आ जाता, कभी दूर चला जाता, कभी बहुत जोर-जोर से भन-भन करने लगता, कभी बिल्कुल धीमे-धीमे। अचानक वह एकदम रुक गया। क्या मच्छर गायब हो गया?

भालू ने थोड़ी देर इन्तजार किया, फिर वह झाड़ी में और अन्दर रेंग गया और अपनी आँखें बन्द कर ली। वह अभी झपकी ले ही रहा था कि मच्छर ने फिर हमला बोल दिया : "भन-भन-भन-भन!"

भालू रेंगते हुए झाड़ी से बाहर निकला और रोने लगा।

"तुम चाहते क्या हो, बूढ़े मच्छर? मुझे लगता है तुम्हारी मौत निश्चित है! ठहर जा बच्चू! अब मैं चाहे एक झपकी भी ना ले सकूँ, परवाह नहीं पर तेरी खैर नहीं!"

जब तक सूरज नहीं निकल आया मच्छर भालू को इधर-उधर दौड़ाता रहा। उसने भालू की हालत एकदम पतली कर दी। उस रात भालू एक पल भी आराम ना कर सका। वह मच्छर को पकड़ने में अपने एड़ी चोटी का जोर लगा दिया और खुद को बुरी तरह मारता रहा।

सूरज उग आया। पशु-पक्षी मीठी नींद से जागे। वे गा रहे थे और खुशी से उछल रहे थे। केवल भालू में ही नए दिन की शुरुआत की ताजगी नहीं थी।

उस सुबह खरगोश जंगल के किनारे भालू से मिला। झबरा भालू लड़खड़ा रहा था, अपने ही पैरों पर नियंत्रण नहीं था। बड़ी मुश्किल से वह अपनी आँखें खोल पा रहा था। वह बहुत उनींदा था। खरगोश खूब हँसा, और हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया।

"बहुत खूब मच्छर; बहुत खूब! पर तुमने ऐसा किया कैसे?"

"मैं अकेला नहीं था," मच्छर ने जवाब दिया। "वहाँ हम बहुत सारे थे और हम कहते हैं कि सब एक पर भारी और एक सब पे भारी। हमें कोई नहीं हरा सकता।"

और वह उड़ गया : "भन-भन-भन-भन!"

अनुवाद : नमिता

बड़े बाबा

एक थे बड़े बाबा। बहुत ही संवेदनशील व खुशमिजाज। उम्र में बड़े होने के नाते घर के लोग उन्हें बड़े बाबा कहा करते थे। घर की देखा-देखी आस-पास व गली-मुहल्ले में भी वे बड़े बाबा के नाम से जाने जाते थे।

बड़े बाबा को बच्चों से बहुत प्यार था। यूँ समझिये कि इतनी बड़ी दुनिया में ईश्वर की यह अमूल्य रचना 'बच्चे' उनकी जान हुआ करते। ऐसे नहीं कि अपने बच्चे व घर-परिवार के बच्चे, कोई भी बच्चा, गरीब का अथवा अमीर का, अड़ोस-पड़ोस का व राह चलता कोई भी बच्चा, बड़े बाबा के प्यार से वंचित न था।

बड़े बाबा को जहाँ बच्चे नजर आ जाते बस वहीं उसे पकड़ कर दो-चार बातें करते, थोड़ा-सा तुतलाते, हँसी-ठट्ठा करके आगे निकल जाते।

उनकी इस आदत से घर की महिलाएँ बहुत परेशान रहती। क्यों न हों! सारा दिन बच्चे घर में घुसे रहते। अड़ोस-पड़ोस के तो दूर, गली-मुहल्ले के बच्चों का जमघट भी बाबा के घर-आँगन पर लगा रहता। सारा दिन घर गन्दा रहता तो अन्दर की स्त्रियाँ परेशान। बाहर शोर-शराबा करते बच्चे तो पड़ोसन परेशान। परन्तु बाबा को व बच्चों को इससे कोई फर्क न पड़ता। बहुएँ भी सारा दिन या तो झाडू-बुहारती या फिर रसोईघर में घुसी रहती। क्योंकि बाबा के इन लाडलों को वक्त-बेवक्त भूख जो लगती रहती।

अम्मा ने तो बाबा को कई बार समझाया होगा, समझाने से न माने तो डाँटती। "बच्चों के साथ बच्चे बन जाते हो, हमें कितनी परेशानी होती है, सारा दिन घर पर चहल-कदमी रहती है... वगैरह... वगैरह..."

जब इन सबसे भी बाबा बाज न आते तो अम्मा दूसरे

तरीके के पैंतरे अपनाती, "किसी के बच्चे को चोट लग गई, कोई गिर गया, आपस में झगड़े... सब तुम्हें ही कहेंगे। बुरा सोचते हुए देर नहीं लगती।" पर बाबा पर अम्मा की इन फालतू बातों का कोई असर न होता।

बच्चे भी बाबा को बहुत प्यार करते। कोई बच्चा बीमार होता या सर्दी-जुकाम से परेशान तो डॉक्टर के बजाय बाबा के देखने भर-मात्र से दुरुस्त। घर के लोग भी फिर बच्चे की जिद की वजह से बाबा के पास ही लाते।

कुछ बाबा के अन्दर अद्‌भुत शक्ति भी थी, कि उनकी गोद में बैठकर हर बच्चा आनन्द का अनुभव करता व खुश रहता।

एक दिन की बात है, बड़े बाबा बहुत-से बच्चों को लेकर खेल रहे थे। बाबा बीचों-बीच कुर्सी पर बैठे हुए थे व बच्चे उनके चारों ओर एक गोल-सा घेरा डालकर। बाबा एक बड़ी-सी गेंद दूर तक उछालते हुए फेंकते व दो बच्चों को दौड़ाते, कौन पहले उठाकर लाएगा? जो पहले उठाकर लाता सभी बच्चे उसके लिए तालियाँ बजाते, उछलते, बाबा भी खुश होते।

पड़ोसन महिला यह सब देख रही थी। उसे यह सब अच्छा न लगता था। वैसे भी वह बड़े बाबा से परेशान रहती, आस-पड़ोस में सबसे कहती, "जब देखो जमघट लगाए बैठा रहता है, बुड्ढा, कब्र पर पैर लटके हैं और बच्चा बना रहता है। इसे और कोई काम नहीं, बच्चों के साथ खेलता रहता है... आदि।" परन्तु लोगों को इस बात से कोई फर्क न पड़ता। वे तो प्रसन्न रहते कि बड़े बाबा हमारे बच्चों को खेलवाते हैं। वह महिला अपने बच्चों को घर पर ही दुबकाए रहती। बच्चे छिप-छिपकर बड़े बाबा का खेल देखते रहते।

तभी गेंद उछलकर जा गिरी पड़ोसन की ड्योढ़ी पर। ड्योढ़ी पर एक गमला रखा हुआ था। बॉल गमले से टकराई तो गमले के दो टुकड़े हो गए व लगा पौधा नीचे गिर गया।

"अम्मा-अम्मा हमारा गमला टूट गया गेंद से।" बच्चों ने दौड़कर अपनी माँ से शिकायत की। तो माँ

दनदनाती हुई बाहर निकली, पहुँच गई जहाँ बच्चे खेल रहे थे।

किसने तोड़ा मेरा गमला जल्दी बताओ, वरना एक-एक करके सबकी पिटाई होगी। सारे बच्चे चुप सभी बाबा को देखने लगे। बाबा भी सकपका गए थे, बच्चों को घबराया देख धैर्य रखा।

सभी को चुप्पी साधे देख वह फिर गुर्रायी, तभी उसके बच्चे दौड़ आए। "यह था अम्मा, इसी ने गेंद फैंकी थी," एक बच्चे को खींचते हुए वह बोला।

"मैंने नहीं फेंकी, मैं तो उठाने गया था।" बच्चा डरते हुए बोला।

"तो किसने फेंकी?" महिला चिल्लाई व एक तमाचा बच्चे के गाल पर जड़ दिया।

बच्चा जोर-जोर से रोने लगा। सभी अवाक् थे।

देखते-ही-देखते महिला ने दो-तीन बच्चों को यूँ ही थप्पड़ मार दिए।

"ऐ.... औरत?" बाबा जोर से चिल्लाए, क्यों न चिल्लाएँ, बाबा के लिए तो उनकी जान थे बच्चे। बच्चों को डाँटना तो दूर, मार दिया...।

वह पड़ोसन महिला कुछ डरी। "नहीं जी, बाबाजी मेरा गमला तोड़ दिया।" डरते-डरते वह अपनी बात पूरी कह पाई।

"तेरा गमला क्या इन बच्चों से बढ़कर है? मैंने फेंकी थी गेंद, ले मुझे मार...।"

बाबा की गर्जन सुनकर घर के सभी स्त्री-पुरुष बाहर निकल आए। आस-पड़ोस के भी 10-12 लोग इकट्ठा हो गए। सभी को पता चल चुका था, कि बाबा के संग खेल रहे बच्चों को किसी ने थप्पड़ मार दिया।

"क्या हुआ...?" बाबा के बड़े बेटे ने कहा।

"क्यों चिल्ला रहे हैं, जी?" अम्मा बोली।

"कुछ नहीं भाग्यवान, गेंद से गमला टूट गया, तो बिटिया बच्चों को जोर से डाँट दिया।" स्वयं ही बड़ापन दिखाकर बाबा ने माहौल को सम्भाल लिया।

"अजी, आप तो ऐसे गरजे, मैंने सोचा किसी बच्चे को चोट-वोट लग गई।" अम्मा बोली।

बाबा ने उन बच्चों को बहुत सहलाया जिन्हें मार लगी थी। व उस महिला से बोले.... "देखो बिटिया, बच्चे तो भगवान का रूप होते हैं। ईश्वर की अनमोल रचना हैं, ये बच्चे!

सोचकर देखो बेटा, न छल, न कपट, न कोई लाग-लपेट, न ही कोई झूठा दिखावा। दुनिया के सभी झूठ-फरेब से परे ये मासूम बच्चे। इनकी आँखों में कोई मैल नहीं, कितनी सच्चाई छिपी है इन नन्हीं सफेद आँखों में। इनके लिए सभी अपने हैं, कोई पराया नहीं, कितने बड़े दिलवाले हैं ये बच्चे।

और तू इतनी बड़ी होकर इतने छोटे दिल की! माँ होकर, दूसरे के बच्चे को इतनी जोर से थप्पड़ मार दिया वो भी एक मिट्टी के गमले के लिये।

ना, बेटी ना, देख यह बच्चा कितनी दहशत में है अब वह तुझसे बात करने में कतराएगा। क्या तू ऐसा चाहेगी कि ये नन्हे भगवान तुझसे बात न करें। बोल!"

वह महिला रो पड़ी, बड़े बाबा के पैरों पर गिर पड़ी। आसपास खड़े लोग भी बाबा की बातों से पिघल गए। सब की आँखों में नमी थी।

उस दिन के पश्चात् पड़ोसन के बच्चे भी बाबा की टीम में शामिल हो गए। वह भी बच्चों का खेल देख कर आनंदित होती।

ऐसे थे बड़े बाबा।

ममता जुगरान

दो लघुकथाएँ

बच्चे ने सैर की

रावेंद्रकुमार रवि

एक बच्चा सोकर उठता है। उसे घर में कोई दिखाई नहीं देता। वह खटोले से उतरकर घुटनों के बल चल देता है। दरवाजे के पास आकर बाहर झाँकता है।

बाहर बकरी के दो बच्चे खेल रहे हैं। बच्चा उनकी ओर बढ़ता है। उनके साथ उनके—जैसा खेलने की कोशिश करता है। पर वह उनके जैसा नहीं खेल पाता। एक बकरी का बच्चा उसको अपना सिर मारकर उसे गिरा देता है। बच्चा उन्हें छोड़कर चल देता है।

बच्चे को बछड़े की आवाज सुनाई देती है। वह उधर देखता है। रस्सी से बँधा बछड़ा अपनी माँ के पास जाने की कोशिश कर रहा है। गाय भी बँधी है और बछड़े की ओर देख रही है। उन्हें देखते-देखते बच्चा चारा काटने की मशीन के नीचे पहुँच जाता हे। उसके नीचे पड़े कटे हुए चारे से खेलने लगता है। थोड़ा-सा चारा उठाकर मुँह में रखता है। तुरन्त थूक भी देता है और आगे बढ़ जाता है।

सामने उसे टमाटर लगे दिखाई पड़ते हैं। वह टमाटर की क्यारी में पहुँच जाता है। पककर लाल हो गए एक टमाटर को हाथ से छूता है। उसे तोड़ने की कोशिश करता है। उसमें मुँह लगा देता है। उसके आगे के दो दाँत टमाटर में चुभ जाते हैं। थोड़ा-सा रस उसकी जीभ में भी लग जाता है, पर उसे उसका स्वाद अच्छा नहीं लगता।

क्यारी के किनारे-किनारे गेंदे के पौधे लगे हैं। बच्चा एक पौधे से फूल तोड़ना चाहता है, पर फूल तोड़ने की कोशिश में वह गिर जाता है।

तभी एक तितली उसकी नाक छूती हुई निकल जाती है। वह तितली के साथ उड़ने के लिए अपने दोनों हाथ ऊपर उठाता है। तितली पपीते के पेड़ के पास से निकल जाती है।

बच्चे का ध्यान पपीता खाती हुई एक चिड़िया की ओर चला जाता है। उसे देखकर चिड़िया गाते हुए कुछ कहती है। बच्चा भी गाते हुए उससे कुछ कहना चाहता है, पर "अ.. आ... आ......" ही कर पाता है।

तब तक चिड़िया उड़कर कण्डे रखने वाले भिठूर पर बैठ जाती है। बच्चा भिठूर की ओर बढ़ता है। जब तक वह वहाँ पहुँचता है, चिड़िया उड़ जाती है।

बच्चा कण्डों से खेलने लगता है। अचानक उसकी उँगली में कुछ चुभ जाता है। वह रोने के लिए मुँह बनाना शुरू ही करता है कि उसे अपनी माँ आती हुई दिखायी देती है। उसके सिर पर सूखी लकड़ियों का गट्ठर रखा है।

माँ एक हाथ से गट्ठर सँभालते हुए, दूसरे हाथ से उसे गोद में उठा लेती है। बच्चा खुश हो जाता है।

मोंटी में आया बदलाव

राजकुमार जैन 'राजन'

चीम्पू हिरण, ननकू भेड़िया, टॉमी कुत्ता, लम्बू जिराफ, जम्बू हाथी, भूरा भालू आदि बच्चे मिलकर क्रिकेट खेल रहे थे। लम्बू जिराफ के गेंद फैंकते ही टॉमी ने जोर से बल्ला घुमाया तो गेंद दूर झाड़ियों में जा गिरी।

"क्या जरूरत थी इतनी जोर से मारने की। वहाँ झाड़ियों में गेंद कौन ढूँढ़ेगा?" लम्बू जिराफ गुस्से से बोला। गेंद उसी की थी।

"अरे छोड़ो क्रिकेट, चलो फुटबाल खेलते हैं।" कहते हुए चीम्पू हिरण ने सामने से आते मोंटी हाथी की तरफ इशारा किया तो सभी जानवर ठहाका लगाकर हँस पड़े।

आप सोच रहे होंगे कि सब हँसे क्यों? दरअसल, मोंटी *गोलमटोल, मोटा, हाथी का बच्चा था जो कुछ समय* पहले ही जंगल की इस बस्ती में आया था। उसे खेलना अच्छा नहीं लगता था, क्योंकि यहाँ कोई उसकी पसन्द का खेल बैडमिंटन नहीं खेलता था। उसे केवल टेलीविजन देखना और पुस्तकें पढ़ना ही पसन्द था। उसने शायद ही कभी फूटबाल को पैर लगाया हो या क्रिकेट का बल्ला ही पकड़ा हो। पर सभी जानवर उसे 'फुटबाल' कहकर ही चिढ़ाते थे।

मोंटी हाथी पर इस छेड़छाड़ का कोई असर नहीं होता था। पर आज इन शैतान जानवरों की टोली की बातें जबरु भालू के कानों में पड़ी। वह उस मोंटी को बहुत पसन्द करता था। मोंटी के पिता भीमा हाथी से जबरू भालू खूब घुल मिल गया था।

जबरु ने मोंटी को पास बुलाकर पूछा, "बेटा, तुम इन सब जानवरों के साथ क्यों नहीं खेलते?"

"ना बाबा, इन शैतानों के साथ खेलने से अच्छा है कि टेलीविजन देखो या फिर किताबें पढ़ो। यहाँ मेरी पसन्द का खेल कोई भी नहीं खेलता..." मोंटी ने कहा।

"पर मोंटी, खेलना भी जरूरी है, इससे शरीर चुस्त व निरोगी बनता है।" जबरु ने प्यार से कहा।

"आगे आप कहेंगे, मोंटी, तुम बहुत मोटे हो, खाना-पीना छोड़ दो, योगासन किया करो..." मोंटी जबरु की बात

पूरी होने से पहले ही बोल पड़ा।

जबरु भालू हँस पड़ा, "मोंटी, बातों में तुमसे नहीं जीत पाता।" फिर रुककर बोला, "और ना ही बैडमिंटन में।" दरअसल भीमा हाथी ने बता दिया था कि मोंटी को केवल बैडमिंटन खेलना ही पसन्द है।

बैडमिंटन का नाम सुन मोंटी उछला, फिर बोला, "क्या आपको बैडमिंटन खेलना आता है?"

"नहीं," जबरु भालू बोला। "पर, क्या तुम मुझे सिखाओगे?"

मोंटी हाथी का यह मनपसन्द खेल था। उसके पापा का इस जंगल में स्थानान्तरण होने की वजह से उसे अपने पसन्दीदा खेल से हाथ धोना पड़ा। यहाँ के जंगल के स्कूल में 'बैडमिंटन कोर्ट' भी नहीं था। पहले वाले स्कूल में उसे इस खेल में इनाम मिले थे।

सप्ताह भर बाद ही गर्मियों की छुट्टियाँ शुरू हो गई। जंगल के कई जानवर कुछ दिनों के लिए पड़ोस के जंगलों में चले गये थे। अब ज्यादातर शाम को मैदान खाली रहता था। अतः मोंटी ने जबरु को बैडमिंटन सिखाना शुरू किया। बदले में जबरु भी मोंटी को क्रिकेट व फुटबाल सिखाता।

छुट्टियों के बाद जानवर लौटे तो मोंटी का खेल देख हैरान रह गये। अगले ही दिन मौका देखकर चीम्पू हिरण, टॉमी कुत्ता, लम्बू जिराफ, ननकू भेड़िया आदि मोंटी के पास पहुँचे। बोले, "क्या तुम हमें भी यह खेल सिखा सकते हो?"

फिर क्या था गोल मटोल मोंटी हाथी उस जंगल का हीरो बन गया। अब वह दोस्तों के साथ फुटबाल और क्रिकेट भी खेलने लगा।

विद्यालय खुलने वाले थे। जम्बू हाथी भी सुन्दर वन में घुमकर वापस आ गया था। शाम को चीम्पू हिरण को अकेला देखकर बोला, "यार मैं जबसे आया हूँ फुटबाल (मोंटी) नजर नहीं आया है मुझे..."

"आएगा भी कैसे? अब वह क्रिकेट बैट जो बन गया है। वह दोस्तों के साथ चौके-धक्के लगा रहा होगा।" मोंटी हाथी को खेलते देखकर सबको अचरज हो रहा था। पर जबरु भालू बहुत खुश था कि उसकी सूझ-बूझ से मोंटी में बदलाव आ गया था।

भवानी प्रसाद मिश्र की कविताएँ
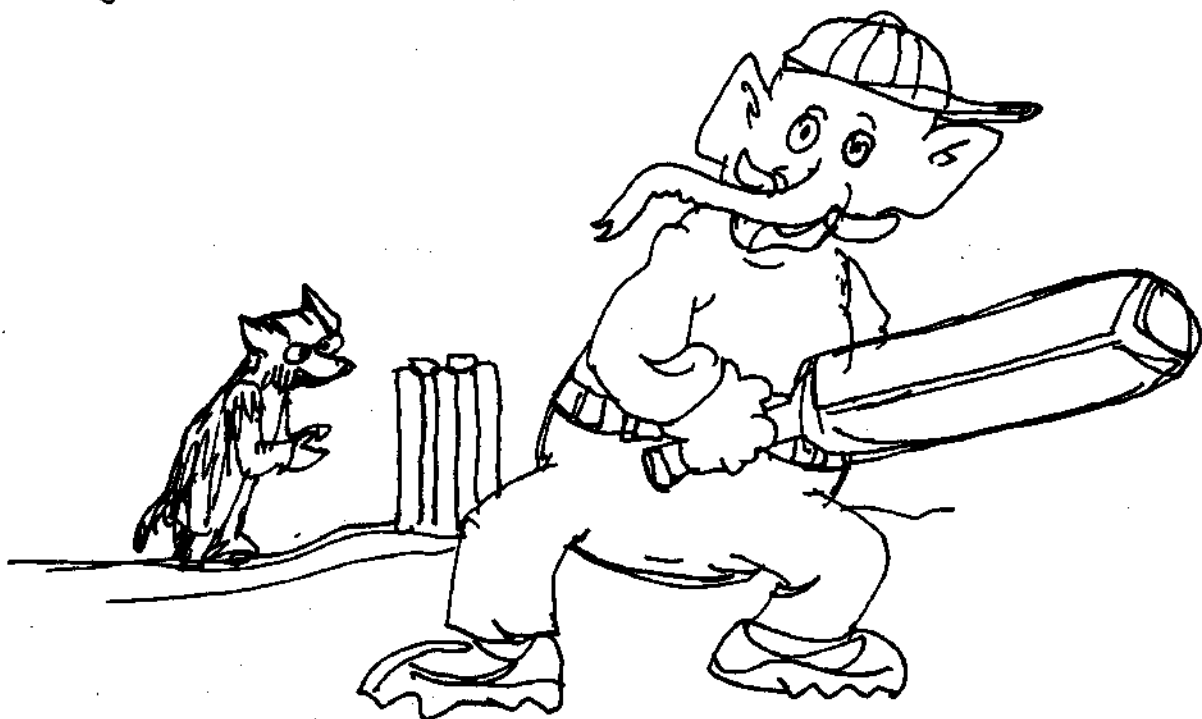
सूरज का गोला

सूरज का गोला
इसके पहले ही कि निकलता,
चुपके से बोला, हमसे-तुमसे इससे-उससे
कितनी चीजों से,
चिड़ियों से पत्तों से,
फूलों-फल से, बीजों से-
मेरे साथ-साथ सब निकलो
घने अँधेरे से
कब जागोगे, अगर न जागे, मेरे टेरे से?

आगे बढ़कर आसमान ने
अपना पट खोला,
इसके पहले ही कि निकलता
सूरज का गोला।

फिर तो जाने कितनी बातें हुईं,
कौन गिन सके इतनी बातें हुईं,
पंछी चहके कलियाँ चटकीं,
डाल-डाल चमगादड़ लटकीं
गाँव-गली में शोर मच गया,

जंगल-जंगल मोर नच गया,
जितनी फैली खुशियाँ,
उससे किरनें ज्यादा फैलीं,
ज्यादा रंग घोला।
और उभर कर ऊपर आया
सूरज का गोला,
सबने उसकी अगवानी में अपना पट खोला।
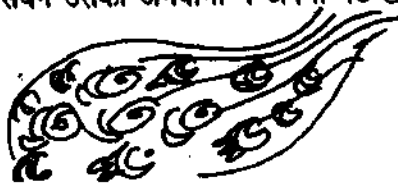
कठपुतली

कठपुतली
गुस्से से उबली
बोली—ये धागे
क्यों हैं मेरे पीछे आगे

तब तक दूसरी कठपुतलियाँ
बोलीं कि हाँ हाँ हाँ
क्यों हैं ये धागे
हमारे पीछे-आगे
हमें अपने पाँवों पर छोड़ दो
इन सारे धागों को तोड़ दो!

बेचारा बाज़ीगर
हक्का-बक्का रह गया सुन कर
फिर सोचा अगर डर गया
तो ये भी मर गयीं मैं भी मर गया
और उसने बिना कुछ परवाह किए
जोर जोर धागे खींचे
उन्हें नचाया!
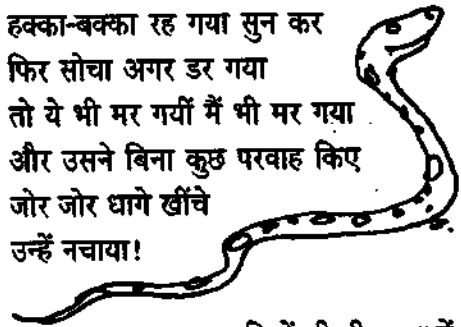
कठपुतलियों की भी समझ में आया
कि हम तो कोरे काठ की हैं
जब तक धागे हैं, बाजीगर है
तब तक ठाट की हैं
और हमें ठाट में रहना है
याने कोरे काठ कर रहना है।

भवानी प्रसाद मिश्र की कविताएँ

भाईचारा

अक्कड़ मक्कड़
धूल में धक्कड़
दोनों मूरख
दोनों अक्कड़
हाट से लौटे
ठाट से लौटे
एक साथ एक बाट से लौटे।
बात बात में बात ठन गयी
बाँह उठीं और मूँछें तन गयीं।
इसने उसकी गर्दन भींची
उसने इसकी दाढ़ी खींची।
अब वह जीता, अब यह जीता,
दोनों का बढ़ चला फ़जीता
लोग तमाशाई जो ठहरे—
सबके खिले हुए थे चेहरे!
मगर एक कोई था फक्कड़
मन का राजा कर्रा-कक्कड़
बढ़ा भीड़ को चीर-चार कर
बोला "ठहरो" गला फाड़ कर।

अक्कड़ मक्कड़
धूल में धक्कड़,
दोनों मूरख,
दोनों अक्कड़,
गर्जन गूँजी, रुकना पड़ा
सही बात पर झुकना पड़ा।
उसने कहा सधी वाणी में,
डूबो चुल्लू भर पानी में,
ताकत लड़ने में मत खोओ
चलो भाई चारे के बोओ!
खाली सब मैदान पड़ा है,
आफ़त का शैतान खड़ा है,
ताकत ऐसे ही मत खोओ,
चलो भाई चारे को बोओ।

कविताएँ

दो बच्चे

—निकोलस ग्वेन

दो बच्चे जैसे दुख के एक ही पेड़ की दो टहनियाँ
उमसभरी रात में बैठे हैं सड़क किनारे
फुँसियों से ढँके चेहरे वाले ये दो भिखारी बच्चे
एक ही दोने से खाते हैं भूखे पिल्लों की तरह
अमीरों की मेज से फेंका हुआ खाना।
दो बच्चे : एक काला, एक गोरा।

जूँओं से भरे नंगे सिर भिड़े हुए हैं
उनके मुँह चल रहे हैं बिना रुके
बासी, खट्टे खाने को झपट रहे हैं
दो हाथ; एक गोरा, एक काला!

कैसी मजबूत और सच्ची है यह एकता!
वे जुड़े हैं अपने खाली पेट और
काट खाने को दौड़ती रात से,
चमकते चौराहों पर बिताई
उदास दोपहरों से,
और विस्फोटक सुबहों से
जब दिन अपनी नशीली आँखें खोलता है।
आज वे एकजुट हैं दो अच्छे कुत्तों की तरह
एक काला, एक गोरा।

जब आयेगा वक्त मार्च करने का,
क्या वे दो अच्छे इंसानों की तरह मार्च करेंगे,
एक काला, एक गोरा!

दो बच्चे, दुख के एक ही पेड़ की दो टहनियाँ,
उमसभरी रात में बैठे हैं सड़क किनारे।

(निकोलस ग्वेन लातिन अमेरिका के देश क्यूबा के महान क्रान्तिकारी कवि थे)

फाग

अलमारी के अन्दर से
चलो निकालें पिचकारी
सजी दुकानों से ले आएँ
नई नवेली एक न्यारी

डिब्बा बोतल टीन कनस्तर
जो भी मिल जाए खाली
टब बाल्टी टंकी हौज
हल्का हो चाहें मन भारी

रंगों से ऊपर तक भर
बिगड़े सूरत हर प्यारी
मित्रों से मिल बारी-बारी
दुश्मन से गाँठे यारी

रंगों की मस्ती में झूम
गाएँ फाग गीत कव्वाली
ऐसी पड़े सब पर बौछार
नभ लगे फूलों की क्यारी।

—डॉ. रीता हजेला 'आराधना'

कविताएँ

बचपन

मैंने देखा है बचपन को।
फटे कपड़ों में,
होटलों और ढाबों पर।
कूड़े के ढेरों में,
मन्दिरों और काबों पर।।
नौकरशाहों के घरों में,
बर्तन माँज रहा है।
मंत्रियों की चमचमाती कारें,
घिसकर पोंछ रहा है।।
संसद के सामने,
बूट पालिश करता है।
राष्ट्रपति भवन के गेट पर,
भीख माँगता है।।
मेम साहब के कुत्तों को,
रोजाना टहलाता है।
शराब की दुकानों पर,
टूटी बोतलें उठाता है।।
सच में स्कूल चलो,
अभियान सफल हो गया।
मिड डे मील के सहारे बच्चा,
भूखे पेट सो गया।।

दुर्गा प्रसाद शुक्ल 'आजाद'

गिलहरियाँ

भूरी श्वेत सी धारियाँ
'धरती' हैं जो स्वयं पर
काली काली आँखें और
थूथन पर हैं मूँछें जिनकी
हाँ कहलाती हैं वह गिलहरियाँ

दो पैरों में बैठ कर वे
हाथों में मूँगफलियाँ पकड़ कर
कुतर कुतर मूँगफलियाँ खाती
लगती हैं बहुत ही प्यारी एवं निराली वे

छूना चाहो अगर तुम इन्हें
तो डर जाती हैं ये
फिर तो पेड़ पर चढ़ने में
देर न लगती इन्हें।
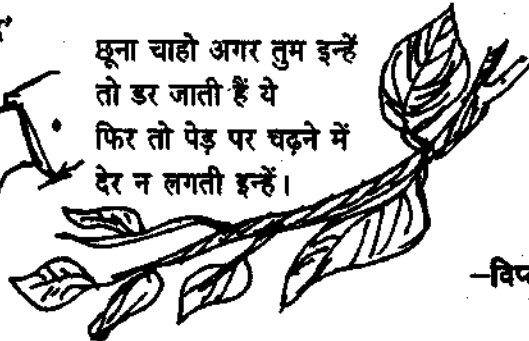
—विप्लव

कैसे कैसे राम

डॉ. बानो सरताज

बच्चों में आदत होती है अपने साथियों, मित्रों, छोटे भाई-बहनों, कुछ विचित्र कुछ अलग से दिखने वालों को विभिन्न नामों से पुकारने की, नामों को बिगाड़ने में उन्हें मजा आता है। लम्बे को लम्बू, मोटे को मोटू, छोटे को ठिंगू छोटू या बुटकी-बुटका कहना उन के खेल का एक भाग होता है। चूहे को मामा कहते हैं तो चन्दा भी मामा होता है उनका.. इन सब में उन की बुद्धिमत्ता और चातुर्य का दर्शन होते हैं, शरारत तो होती ही है.. पर शरारत और बालक का साथ आदिकाल से है और अंतकाल तक चलेगा... बच्चे शरारत न करें तो उन में और बूढ़ों में अन्तर क्या रहा?

बच्चे और किशोर प्रायः कहते सुने जाते हैं 'अपने राम से यह काम न होगा', 'अपने राम के पास पार्टी करने या लुटाने को पैसा नहीं है भाई' बहुत से लोगों को पुकारते हैं तो उन के नाम के साथ राम लगा कर पुकारते हैं, देवेन्द्र शर्मा 'डनलप' की एक कविता है जिस में वे एक बड़ी तोंद वाले हलवाई से परिचय करा रहे हैं। कविता का शीर्षक है 'तोंदू राम':

ये हलवाई तोंदू राम
दूर-दूर तक इनका नाम।
पालथी मार के जो जम जाते
न उठने का लेते नाम।। ये हलवाई तोंदू राम।।
हिन्दु को करते हैं रामराम
मुसलमान को करें सलाम।
नौकर-चाकर सौदा तोलें
स्वयं गिनते हैं बस दाम।। ये हलवाई तोंदूराम।।

अधिक भोजन करने, सदैव पशुओं की भांति कुछ न कुछ खाते रहने से पेट निकल आता है, अब पेट बाहर को निकले व्यक्ति को कोई 'पेटू राम' कहे तो ऐसा गलत भी नहीं! उसका पेट उसकी सब गलत आदतों की घोषणा करता है, वह उपहास का निशाना बनता है, भाग्यवती देवी रन्नो 'पेटू राम' के विषय में क्या कहती हैं? सुनिये :

हरदम खाते पेटू राम, पेट फुलाते पेटू राम।

अपनी मोटी-बड़ी तोंद को, खुब हिलाते पेटू राम।
रोज़ रात को खर्राटों से, शहर जगाते पेटू राम।
उन्हें चिढ़ाता है जब कोई, खिसिया जाते पेटू राम।
ठुमक-ठुमक कर चलते वो, भाग न पाते पेटू राम।
गदहे करते ढेचूँ-ढेचूँ, जब भी गाते पेटू राम।

भोंदूराम की उपाधि बच्चे मूर्ख को, मोटू को, पेटू को, आलसी को विशाल-ह्रदयी बन प्रदान करते रहते हैं 'दीनदयाल उपाध्याय' 'भोंदू राम' कविता में भोंदूराम के व्यक्तित्व की विशेषताओं का परिचय कराते हैं। ढूंढों तो

बच्चों, अपने आसपास ऐसे भोंदूरामों को...

मोटे ताज़े भोंदूराम, इन्हें चाहिये बस आराम।
मेहनत इन्हें न भाती है, विद्या न आती है।
खाने-पीने में है नाम, इन्हें चाहिये बस आराम।
सब कहते हैं मक्खीचूस, भारी-भरकम औ' कंजूस।
धन हैं खूब बचा पाते, भोजन नहीं पचा पाते।
काम कहो तो हुआ जुकाम, इन्हें चाहिये बस आराम।

प्यार से पुकारने को बच्चे, पशु-पक्षियों को भी उन के नाम के साथ राम जोड़ कर बुलाते हैं। कवि 'विष्णु जी माहोलकर' तोते को 'तोताराम' कहकर बुलाते हैं और तोता सब को कितना प्यारा है? यह बताते हैं :

हरा-हरा यह तोताराम, खड़े-खड़े करता आराम।
दीदी रोज़ सिखाया करती, बोलो मिट्ठू गंगाराम।
दादा जी का हरेकृष्ण, दादी जी के चारों धाम।
पिंजरे का यह शेर कहाए, वर्षा सर्दी हो या धाम।

'डॉ तारादत्त निर्विरोध' गधेराम की लाटरी कविता में गधे को 'गधेराम' कहकर उस की मूर्खता की कहानी सुनाते हैं:

गधे राम की खुली लाटरी
एक लाख धन आया।
'थोड़ा' कहलाने का उसने
अच्छा अवसर पाया।
किन्तु छपा जब फोटो उसका
देख सभी यों बोले।
कैसे सम्भव? गधा लाख में
थोड़े जैसा हो ले?

'रोहिताश्व अस्थाना' ने भी गधे को निशाना बनाया है... वह गधे राम के साइकिल पर चढ़ने के कटु अनुभवों का वर्णन कर रहे हैं :

गधेराम ने चलते-चलते
जब तक ब्रेक लगाई
तब तक साइकिल धोबीमल के
सीने पर चढ़ आई।
धोबीमल के चोट लगी तो
डण्डा तुरन्त उठाया
और पीठ पर गधेराम के
ताबड़तोड़ बजाया।।
छोड़ छाड़कर वहीं साइकिल
भागे घर को गधे राम।।

पशु-पक्षी हो गए तो एक कीट क्यों रह जाये? 'मुहम्मद साजिद खान' को यह अन्याय नहीं ठीक लगा, वह मच्छर को लेकर मैदान में उतर आये और मच्छर राम पर कविता कहते-कहते उस की अच्छी-खासी खबर ले ली। पढ़िये तो ज़रा!

इतनी चालाकी न अच्छी, सुन लो मच्छर राम।
दिन में सोते, रात जगाते, और नहीं कुछ काम?
बने डाक्टर घूम रहे हो, इंजेक्शन ले कर साथ
हमें दिखाओ क्या एम.डी. की, डिग्री रक्खे पास?
बिना बताये चुपके-चुपके, ले जाते हो खून
फिर आकर कानों में मेरे, करते टेलीफ़ून।
छोड़ो ऐसा नीच काम तुम, बात धरो यह कान

वरना डी.डी.टी. छिड़कूँगा, नहीं बचेगी जान।

जब भोंदूराम, पेटूराम, तोंदूराम, गधेराम, तोताराम, मच्छरराम एक अखाड़े में उपस्थित हो जाएँ तो हर कोई उनके मुकाबले में आने का साहस कर सकता है। पापड़ राम क्यों किसी से पीछे रहते। खाद्य बिरादरी का प्रतिनिधित्व करने आ गये सामने :

अखाड़े में उतरे एक दिन
मिस्टर पापड़ राम।
बड़े पहलवानों जैसे
लगे करने व्यायाम।
झटका लगा, एक छोटा सा
हड्डियाँ थीं चरचराई
भागम भाग लौटे घर को
सारी सुधि बिसराई।

इन पापड़ राम को रसोई घर में ढूँढ़ने न दौड़ जाना बच्चों। ये सचमुच के पापड़ नहीं बल्कि दुबले-पतले, सूखे कोई व्यक्ति हैं। जिन की हड्डी-हड्डी दिखती है। मांस शरीर पर नाम को नहीं है। छोड़ो अब यह फूले-फूले, मोटे से कौन साहब आ रहे हैं। पर यह आ नहीं रहे हैं लाये जा रहे हैं। बहुत मोटे हैं ना, पैदल नहीं चल सकते इसलिए कन्धों पर चढ़ कर आ रहे हैं। और कन्धों पर भी किसके? एक बालक के! छी! छी! बुरी बात! जिस के कन्धों पर सवार हो क्या उस की दशा नहीं दिखाई देती तुम्हें बस्ते राम! माहोलकर अपनी कविता में इसी बस्ते राम को कुछ दूसरी तरह पेश कर रहे हैं। उसके व्यक्तित्व के अन्य पहलू जो खुल कर सामने नहीं आते, उन्हें प्रकट कर रहे हैं। बस्ते की प्रशंसा ही किये जा रहे हैं। इसे पढ़ कर तो बस्ते के सम्बन्ध में बच्चों की धारणा ही बदल जायेगी।

मेरे प्यारे बस्तेराम, महंगे हो या सस्ते राम।
हफ़्ते भर मेहनत से थक कर, करते खूंटी पर आराम।
तुम तो काफ़ी छोटे हो, फिर भी लगते मोटे हो।
सुबह गये थे शाला में, संध्या आकर लेटे हो।
भाषा और विज्ञान हो, तुम गणितज्ञ महान हो।
तुम ही हो इतिहास तुम्हीं, भौगोलिक विद्वान हो।
साथ हमारे आते हो, हमको खूब पढ़ाते हो।
इंजीनियर, वकील, सुकवि, शिक्षक तुम्हीं बनाते हो।

मेरे प्यारे बस्ते राम।
महंगे हो या सस्ते राम।।

तो बच्चो, तुम भी प्रयत्न करो, तुम्हारे आसपास के ऐसे ही लोगों को ढूँढ़ने की। फिर हमें भी उनसे मिलवाओ तो कितना मज़ा आयेगा।
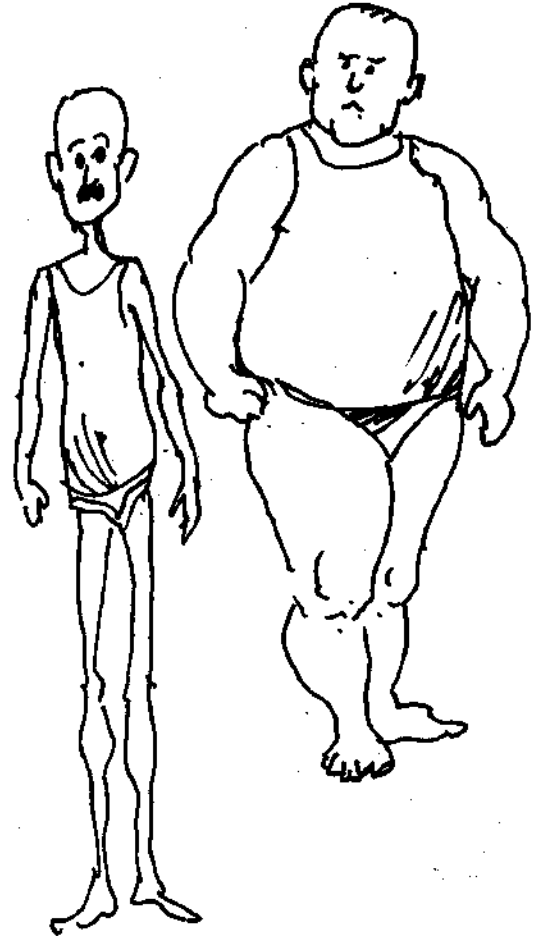
अनुराग बाल कम्यून के बच्चों की कलम से

प्यारे दोस्तो,

अनुराग बाल पत्रिका के पिछले अंकों में तुमने 'अनुराग ट्रस्ट' के बारे में पढ़ा होगा। यह संस्था बच्चों के स्वस्थ सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विकास लिए बहुत से काम करती है। इन्हीं में से एक है अनुराग बाल कम्यून। यहाँ कई बच्चे एक साथ रहते हैं, पढ़ते हैं, नई-नई बातें सीखते हैं और एक स्वतंत्र माहौल में भविष्य के स्वतंत्र और जिम्मेदार नागरिक बनने की राह पर शुरुआती कदम रखते हैं। अभी गोरखपुर में चल रहे ऐसे कम्यून में रहने वाले बच्चों ने अपने कुछ मजेदार अनुभव लिखकर भेजे हैं। तुम लोग भी ऐसी चीजें लिखकर भेज सकते हो।

— सम्पादक

कहानी

टेलीफोन की घण्टी

यह घटना उस समय की है, जब मैं गोरखपुर में थी। वहाँ पर सभी को कुछ न कुछ काम मिला हुआ था। किसी को बाहर का काम, किसी को घर का काम। मुझे भी एक जिम्मेदारी मिली थी। जब घर में कोई बड़ा न होता था तो फोन मुझे रिसीव करना होता था। दिन में आनेवाला फोन तो मैं आराम से रिसीव कर लेती थी मगर जब रात का समय होता था तो कब घण्टी बजी कब बन्द हो गयी इसकी मुझे कोई खबर न होती थी। उस समय मैं खर्राटे भरकर सो रही होती थी। सोते समय अगर कोई चोर भी आये, और चोरी करके चला जाये, तो भी मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता था। मुझे इस बात की जरा भी चिन्ता नहीं थी कि इससे कितना नुकसान हो सकता है। मैं इन सब चीजों के बारे में सोचती ही नहीं थी। जब मुझे टेलीफोन रिसीव करने की जिम्मेदारी मिली तो बहुत परेशानी होती थी। रात को फोन हमेशा नहीं आता था जब कभी कोई जरूरी बात होती थी तो कभी-कभार रात को फोन आ जाता था।

कई बार तो मैं सोयी की सोयी रह गयी, फोन की घण्टी बजी और कट गयी। मगर अगली सुबह मेरी अच्छी तरह खबर ली गयी। मुझे भी अपने ऊपर बहुत गुस्सा आया कि लगभग सभी लोग जग जाते हैं, मैं क्यों नहीं जग पाती हूँ। मैंने सोचा पर मुझे समझ में नहीं आया। फिर मैंने सोचा कोई बात नहीं गलती तो सभी से होती है लेकिन अच्छी बात तो यह होती है कि अपनी गलती मानकर उसे सुधारने का प्रयास करना चाहिये। मैंने सोचा, क्यों न मैं मन में संकल्प लूँ कि आगे से मैं फोनवाले मामले में सचेत हो जाऊँ, आगे से फोन आयेगा तो जरूर रिसीव करूँगी।

मैं हर रात को सोने से पहले फोन के रिसीव करने के बारे में सोचकर सोती थी बहुत दिनों तक फोन नहीं आया। मैंने सोचा अब तो मैं फोन रिसीव कर ही लूँगी। बात धीरे-धीरे पुरानी पड़ती गयी मेरे अन्दर का जोश ठण्डा पड़ गया। मैंने सोचा फोन आता-वाता है नहीं मैं क्यों फोन के बारे में सोच-सोचकर अपनी नींद खराब करूँ। आराम से निश्चिन्त होकर सोऊँ। जैसे ही मैं निश्चिन्त होकर सोयी। चार-पाँच घण्टे तो मैं खूब खर्राटे लगाकर सोयी, अभी भी मैं सो ही रही थी। रात के दो-तीन बजे होंगे, फोन की घण्टी बजी।

मुझे थोड़ा-थोड़ा महसूस हुआ कि शायद फोन आया है, मैं नींद के नशे में थी। बिस्तर पर लेटे ही लेटे मैं हैलो! हैलो! करने लगी मुझे लग रहा था कि मैं फोन पर बात कर रही हूँ। थोड़ी देर बाद घण्टी बजनी बन्द हो गयी, मैं कब उसी बीच सो गयी इसकी मुझे कोई खबर नहीं थी। फोन किसी ने रिसीव कर लिया था। रात बीती सुबह आयी। सुबह हम सभी लोग चाय पीने के लिए बैठे थे।

तभी मुझे थोड़ा-थोड़ा याद आ रहा था, कि शायद रात को कोई फोन आया था किसका फोन आया था ये तो मुझे मालूम नहीं था क्योंकि फोन रिसीव तो मैंने किया नहीं था। मुझे नाम याद नहीं आ रहा था। मुझे लगा कि शायद मैंने कोई फोन का सपना देखा होगा। फिर मुझे लगा कि नहीं मुझे एकबार सबसे पूछ लेना चाहिये अगर फोन आया होगा तो किसी न किसी ने रिसीव किया ही होगा। मैंने पूछा तो जिसने फोन उठाया था वह खूब तेजी से हँसने लगी। मैं आश्चर्यचकित होकर सोचने लगी कि मैंने ऐसा क्या पूछ लिया जिसमें ये इतना हँस रही है अपनी हँसी को रोकते-रोकते उसने सभी को बताया कि रात को फोन आया था और ये बिस्तर पर लेटे-लेटे ही हैलो! हैलो! कर रही थी, वो भी आँख बन्द किये हुए। यह सुनकर मैं तो हैरान रह गयी और सभी खूब हँसे। जब भी फोन आता है, तो सभी लोग मुझे देखकर हँसने लगते हैं।

—नन्दिता

एक छोटी लड़की और उसका मालिक

एक शहर में एक बहुत ही गरीब आदमी अपनी पत्नी और एक बेटी के साथ रहता था। वह आदमी एक चूड़ी बनाने के कारखाने में काम करता था। उसका नाम सुरेश था। एक दिन उसकी पत्नी की तबीयत खराब हो जाती है। तो वह कारखाने नहीं जाता है। दूसरे दिन वह अपनी बेटी रीता को समझा दिया कि वह अपनी माँ का ख्याल रखेगी और उसे समय से दवा दे देगी। रीता ने वैसा ही किया।

जब सुरेश कारखाने पहुँचा तो उसका मालिक गुस्से से आग-बबूला हो रहा था। उसने सुरेश को डाँटते हुए कहा—रोज कारखाने आया करो नहीं तो नौकरी से निकाल दिये जाओगे। सुरेश ने कुछ नहीं कहा और चुपचाप काम करने लगा और सोच रहा था कि जाते समय मालिक से पैसे लेके रीता की माँ के लिए दवा ले लेंगे। लेकिन जब सुरेश शाम को मालिक

के पास गया तो मालिक ने यह कहकर भगा दिया कि रोज कारखाने आते नहीं हो और पैसे माँगते हो। रोज आओगे तभी पैसे मिलेंगे नहीं तो नहीं मिलेंगे। सुरेश अपने मालिक के सामने खूब रोया-गिड़गिड़ाया। उसने यह भी बात दिया कि उसकी
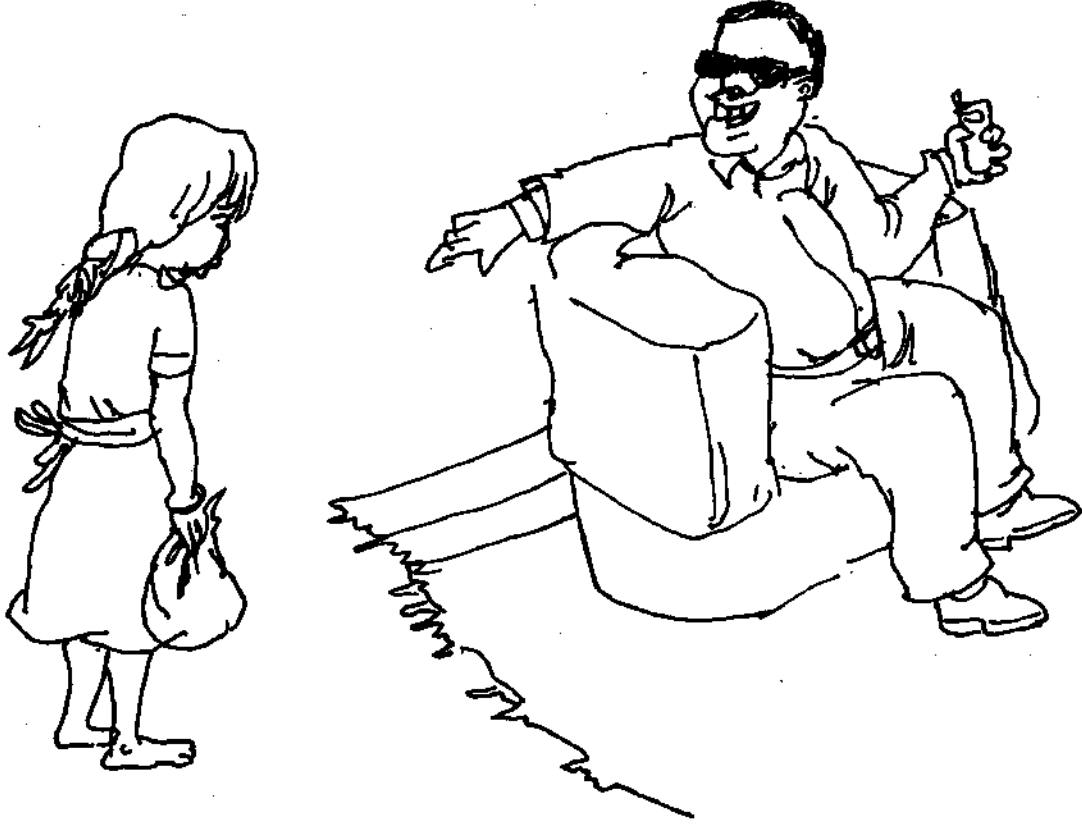
पत्नी की तबियत बहुत खराब है। लेकिन उसको जरा भी रहम नहीं आया।

सुरेश उदास होकर अपने घर गया और देखा कि रीता की माँ की तबियत पहले से और खराब हो गयी है। जब उसने सुबह उठकर देखा कि रीता की माँ अब इस दुनिया में नहीं रही। सुरेश दुःख के कारण पन्द्रह दिन कारखाने नहीं गया। इसलिए उसे कारखाने से निकाल दिया। अब वह बहुत उदास रहने लगा। उसके पास न दवा के लिए पैसे और न अपनाा और अपनी बेटी का पेट भरने के लिए। इसलिए रीता काम करती है। वह भी चूड़ी बनाने के कारखाने में काम करती है। उस कारखाने का मालिक बहुत ही बेरहम होता है और वहाँ जो बच्चे काम करते हैं। उन्हें वह बहुत मारता है। उनके पैसे छीन लेता है उन्हें घर नहीं जाने देता। वह उनसे बहुत काम कराता। रीता उससे कहती मुझे मेरे घर पहुँचा दो। लेकिन वह नहीं सुनता उसे भर पेट खाना नहीं देता। रीता जब उससे अपने पैसे माँगती तो वह उसे मारता और उस दिन उसे खाना नहीं देता था। धुएँ के कारण रीता के फेफड़ों में छेद हो गये। उसके पास दवा के लिए पैसे नहीं थे। अब वह काम नहीं कर पाती। इसलिए उसके मालिक ने उसे कारखाने से निकाल दिया। जब वह अपने घर पहुँची तो उसके पापा उसे नहीं मिले।

वह हमेशा नौकरी की तलाश में इस कारखाने से उस कारखाने में थे लेकिन कोई भी मालिक उसके अच्छे नहीं थे। सब पहले मालिक जैसा व्यवहार करते। और वह नौकरी की तलाश में इधर से उधर घूमती और उसकी ज़िन्दगी इसी तरह बीतती चली जाती है।

—अन्जू

एक सपना

एक शहर था। उस शहर के किनारे हिस्से में एक टूटी-फूटी पुरानी झोपड़ी बनी थी। उस झोपड़ी के अन्दर एक गरीब परिवार रहता था। उस परिवार में एक लड़का और उसकी माँ रहती थी। उसकी माँ बीमार रहा करती थी। लड़के का नाम सोहन था। सोहन अभी बहुत बड़ा नहीं था। उसकी माँ बिस्तर पर पड़ी रहती थी। माँ के पास इतने पैसे नहीं थे कि वह अपना इलाज करा सके। वह सोचती है कि इस महंगाई के जमाने में किसी गरीब का इलाज कहाँ हो सकता है इलाज तो उसी का हो सकता है जिसके पास पैसा है, हम कहाँ उनकी बराबरी कर सकते हैं। वह अपने बेटे को पढ़ाना चाहती है। उसका बेटा पढ़ाई कर ले और उसे तो इस दुनिया में जीना है। मुझे तो अब जीने के लिए कुछ ही साल है।

किसी तरह वह अपने बेटे को स्कूल में भर्ती करा देती है और अपने बेटे से कहती है कि तुम पढ़ाई में खूब मेहतन करना। लेकिन सोहन का दिल पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता था, क्योंकि वह अपनी माँ के बारे में सोचता था कि वह बीमार रहती है उनके पास इलाज के लिए पैसे नहीं हैं और कहता कि वह अपनी माँ के इलाज के लिए पैसा जमा करेगा और अपनी माँ का इलाज कराएगा। वह काम ढूँढ़ने निकल जाता है और रास्ते में बड़ी-बड़ी दुकानें, छोटी-छोटी दुकानें देखता हुआ जा रहा होता कि एक मोड़ पर उसी के बराबर के तीन-चार लड़के कूड़े में से पन्नी निकाल रहे थे। वह भी सोचता है कि मैं भी यही काम कर लेता हूँ। वह उन सभी के साथ यही काम करने लगता है। जब वह काम खत्म करके घर की तरफ जाने लगता है। रास्ते में चलते-चलते नींद आने लगती है क्योंकि वह दिनभर से भूखा-प्यासा था और थकान भी लग रही थी। चलते समय रास्ते में कुछ ही दूरी पर नीम का पेड़ दिखायी दिया। वह नीम के पेड़ के नीचे गया और सो गया। उसने एक सपना देखा कि वह स्कूल जा रहा है, स्कूल में बहुत से उसके दोस्त हैं दोस्त उसको अपने साथ-साथ रखते हैं और उसको किसी बात से दुःखी नहीं करते हैं। स्कूल में छुट्टी हो जाती है और वह अपने दोस्तों से विदाई लेकर घर चलने लगता है तो रास्ते में देखता है कि यहाँ हर कोई एक-दूसरे की मदद करते हैं और अपना हर काम भी करते हैं। एक दुकानदार उसको बुलाता है और कुछ खाने की सामग्री हाथ में पकड़ा देता है और उससे पैसा भी नहीं लेता है। सोहन दुकानदार से कहता है पैसे! दुकानदार कहता कि पैसे, कैसे पैसे! नहीं यहाँ पर समान पैसों से नहीं मिलता, जिसकी जो जरूरत होती है वह दुकान पर आते हैं और ले जाते। सोहन को कुछ समझ में नहीं आता है वह फिर घर की तरफ बढ़ जाता है तो सभी पड़ोस वाले उसकी माँ की मदद करते हैं और उसकी माँ अब अच्छी हो गई। सोहन खुश हो जाता है और माँ के गले लग जाता है। तभी उसकी नींद खुली, तो देखता है सब कुछ पहले जैसा है कुछ नहीं बदला। उसको अपनी माँ की याद आती है वह घर के तरफ बढ़ जाता है।

—श्रुति

चीकू मीकू

चीकू-मीकू दो थीं बिल्ली
आपस में करती थीं खिल्ली
एक दिन वह झगड़ पड़ी
किसी बात पर अकड़ पड़ी
इतने में एक चूहा आया
दोनों को उसने समझाया
चीकू बोली चूहा भाई
आज जरा एक बात फँसी है
हम दोनों में कौन बड़ी है
मीकू को भी आया ताव
उसने भीदी यही सुझाव
तुम ही चूहा करो नपाई
खत्म कराओ हमारी लड़ाई।
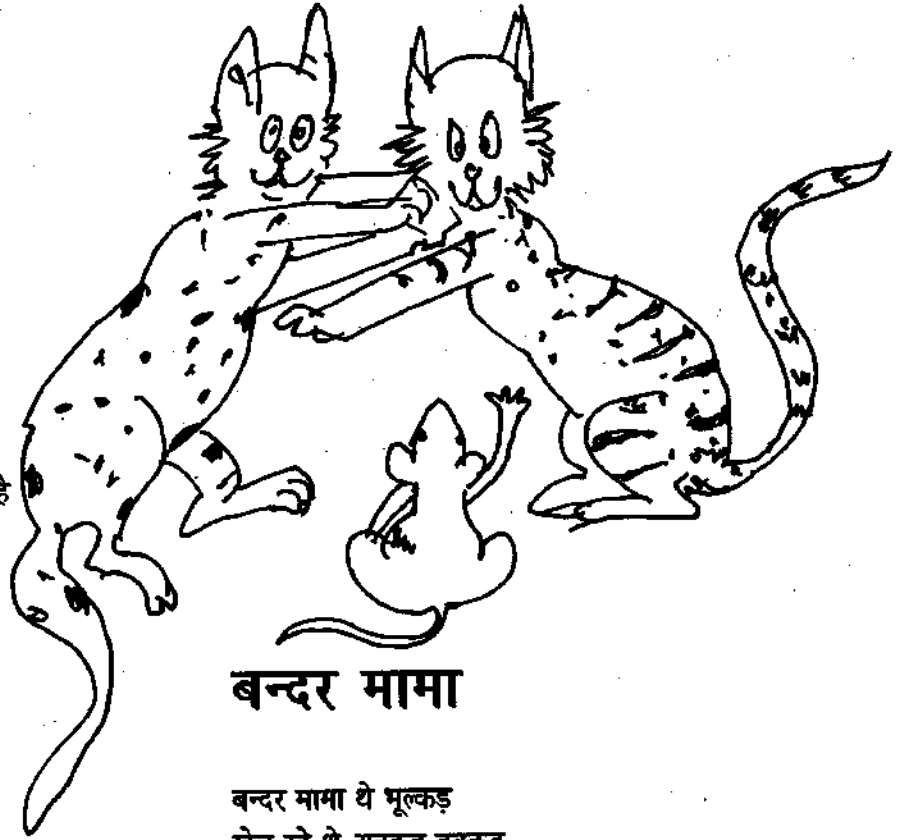
बन्दर मामा

बन्दर मामा थे भूल्कड़
खेल रहे थे अक्कड़-बक्कड़
छोड़ अपने बच्चे को
जा पहुँचे वह बक्सर
बक्सर में तो कोई न बक्सा
बन्दर मामा पकड़े रिक्शा
रिक्शे पर वह बैठे-बैठे
जा पहुँचे अर्द्धकुम्भ
अर्द्धकुम्भ में डूबकी एक लगाये
बन्दर मामा अन्दर ही अन्दर रह गयें
ऊपर कभी न आये।

—साहिल

पक्षियों के पेट में होती है चक्की

पक्षियों को छोड़ प्रायः सभी कशेरूकी प्राणियों के मुँह में दाँत होते हैं। इन्हीं से वे अपने आहार के टुकड़े कर पाते हैं, उसे चबाकर बारीक और आहार पथ पर निरन्तर आगे सरकते रहने योग्य बनाते हैं, पाचन क्रिया के लिये। हम मानव तो अपने आहार के कठोर दानों अनाज वगैरा का चक्की में पीसकर खाते हैं। पक्षी बेचारे क्या करें? उनकी चोंच तो केवल चुन कर चुग कर आहार दाने बीज वगैरा एकत्रित भर करने का कार्य करती है।

परन्तु प्रकृति बड़ी सयानी, बड़ी न्याय प्रिय है। उसने पक्षियों के पेट में भी काफी कुछ चक्की जैसा ही एक अंग बनाया है जिसे गिज़र्ड कहते हैं। पक्षी जल्दी-जल्दी चुगकर अनाज बीज वगैरा को आहार नली में से होकर एक बड़ी थैली में एकत्रित कर लेते हैं जिसे क्रॉप कहते हैं। यहाँ की नमी से ये दाने फूल कर कुछ नर्म पड़ जाते हैं। क्रॉप में से थोड़ा-थोड़ा करके ये दाने एक और नलिका द्वारा गिज़र्ड में जाते हैं। गिजर्ड बन्द सीपी-प्राणी जैसी चपटी और खूब मोटी रचना होती है। इसकी आमने-सामने की दीवारें काफी मोटी और अत्यन्त कठोर पदार्थ की बनी होती है। इनकी सतह धारीदार और खुरदरी होती है काफी कुछ हमारी चक्की के खुटे हुए पाटों की तरह। इन दीवारों में निरन्तर एक हरकत होती रहती है। इसी से आहार के दाने पिस जाते हैं। पिसने की इस क्रिया में सहायता के लिये गिज़र्ड में, पक्षी विशेष के आकार के मान से, कंकर पत्थर के टुकड़े मौजूद रहते हैं। इनको पक्षी दानों के साथ बाहर से चुग कर निगलते रहते हैं। शुतुरमुर्ग और ऐमू जैसे विशाल पक्षी, विशेषकर चिड़ियाघरों में कैद, तो कितनी ही और वस्तुऐं भी निगल जाते हैं। उनके पेटों में कई बार बटन, नट-बोल्ट, हाथ घड़ियाँ, छोटे ताले जैसी चीजें पाई गई हैं।

हाँ तो गिज़र्ड में से पिसकर निकलने वाला आहार अपने आगे-आगे के सफर पर फिसलता जाता है। इस दौरान उसके पोषक तत्व आँतों में सोख लिये जाते हैं और पचने लायक बचा खुचा कचरा, मल-मूत्र और प्रजन के संयुक्त द्वार-क्लोऐका में से बाहर फेंक दिया जाता है।

गिज़र्ड

खड़ा काट
(अर्धकाल्पनिक)
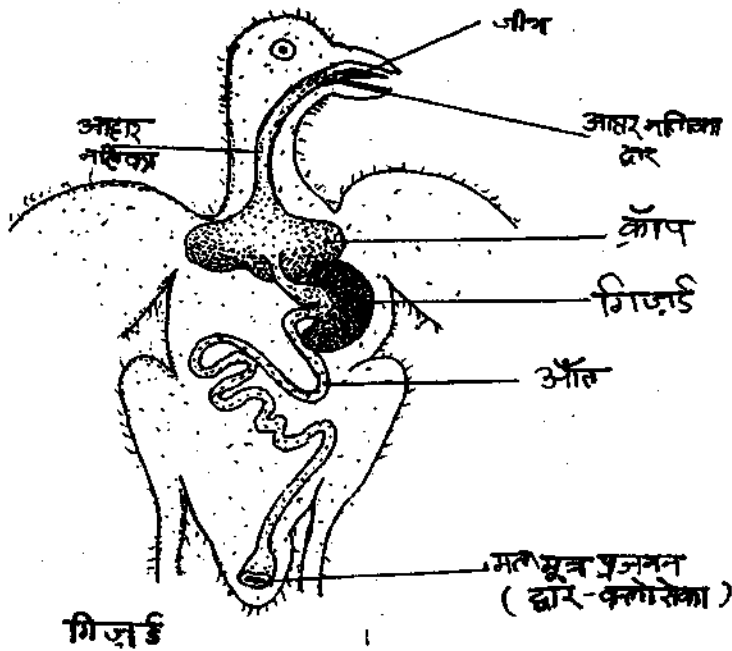
दूध देने वाला पक्षी कबूतर

सभी स्तनधारी प्रजातियों की मादायें अपने स्तनों से अपने नये जन्मे शिशुओं को अपने दूध पिलाकर पोषित करती हैं। पर क्या तुम जानते हो कि कबूतर परिवार के पक्षी-कबूतर फाक्ता आदि-भी अपने नवशिशुओं को अपना दूध पिलाते हैं। और मजे की बात यह है कि इसके लिये उन्हें स्तनों की आवश्यकता नहीं होती इसीलिये नर और मादा दोनों ही के शरीर में दूध बनता है।

कबूतर के अण्डों में से सात-आठ दिन में नये बच्चे निकलते हैं। इसी समय पर नर-मादा के शरीर में दूध बनने लगता है। इनके पेट के अग्र भाग में, आहार एकत्रित करने की एक थैली रहती है जिसे क्रॉप कहते हैं। इसी की भीतरी दीवार की सतह पर की कोषिकायें फूल कर लिजलिजी हो जाती हैं और अपघटित होकर सफेद रंग का एक गाढ़ा द्रव बनाती हैं। यही है इनका दूध। यह क्रिया इनकी कुछ विशेष ग्रन्थियों से रिसने वाले एक पदार्थ (हॉरमोन) के प्रसाव से होती है जो कि स्तनधारियों के हॉरमोन जैसा ही होता है। भर पेट दाना चुगने के कुछ देर बाद यह क्रिया चालू हो जाती है। धीरे-धीरे क्रॉप इस दूध से भर जाता है। माता-पिता को देख कर इनके बच्चे, और पक्षियों के बच्चों की तरह मुँह फाड़कर चिल्लाते नहीं है। माता-पिता इनके पास आकर पेट के बल बैठ जाते हैं और अपनी गर्दन नीचे की ओर सिकोड़ लेते हैं। इससे दूध इनके कण्ठ तक आ जाता है। तब इनकी खुली चोंच में अपनी नन्हीं चोंच बोर कर बच्चे पेट भर यह दूध पीते हैं। यह दूध जिसे "पिजन मिल्क" (कबूतर का दूध) कहा जाता है अपने पोषक गुणों में स्तनधारियों के दूध जैसा ही होता है। बल्कि इसमें वसा की मात्रा तो उससे कई गुना ज्यादा होती है।

जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं माता-पिता इन्हें इस दूध के साथ अधपचे दानों की रस भी पिलाने लगते हैं और दूध बनना कम होता जाता है। अपना दाना स्वयं चुगने लायक होते-होते यह दूध बनना बन्द हो जाता है।

—देवकीनन्दन मिश्रराज

जंगली कबूतर बच्चे को दूध पिलाते हुए

गतिविधियाँ

'नवांकुर बाल मेला'

गाजियाबाद। गाजियाबाद में पहली बार अनुराग ट्रस्ट और आजाद यूथ क्लब ने नवांकुर बाल मेला, 06 का आयोजन 23, 24 और 25 दिसम्बर 2006 के दौरान किया। बच्चों को शारीरिक ही नहीं मानसिक व सांस्कृतिक रूप से उन्नत करने के मकसद से चित्रकला, रचनात्मक लेखन, फुटबाल, लम्बी कूद, दौड़, तीन टाँग दौड़ आदि प्रतियोगिताएँ करवायीं गयीं। बाल मेले में लगभग 175 बच्चों ने भाग लिया। 23 दिसम्बर को रचनात्मक लेखन, 24 दिसम्बर को खेलकूद व चित्रकला प्रतियोगिता तथा आखिरी दिन यानी 25 दिसम्बर को पुरस्कार वितरण समारोह हुआ जिसमें बच्चों को एक मजेदार फिल्म भी दिखायी गयी।

मेले को लेकर बच्चों में पहले से उत्साह दिखलायी पड़ रहा था। मेले से दस दिन पहले से आजाद यूथ क्लब के बच्चों और किशोरों ने मेले के लिए घर-घर जाकर पैसे जुटाने शुरू कर दिये थे। साथ ही कालोनी के एक खाली पड़े प्लाट को फावड़ों, खुरपियों और झाड़ू से साफ करना शुरू कर दिया था। पहले इस प्लाट में कूड़ा डाला जाता था। कुछ दिनों में ही इसे खेलने लायक बना दिया गया। मुहल्ले के अंकल-आण्टी और दादा-दादी लोगों ने इसके लिए बच्चों की खूब तारीफ की और शाबाशी दी। मेले के प्रचार के लिए बच्चों ने हाथ से बनाये पोस्टर दीवारों और दुकानों पर जगह-जगह लगाये। बच्चों ने खुद ही इस कार्यक्रम के निमंत्रण-पत्र और भागीदारी का फार्म अन्य बच्चों से भरवाने का काम बेखूबी किया।

रचनात्मक लेखन के विषयों जैसे असली इंसान, मुझे गुस्सा क्यों आता है? मेरा सपना, बच्चे जो पढ़ नहीं पाते, रिक्शावाला आदि पर लिखकर 23 दिसम्बर तक दिये गये। अनुराग ट्रस्ट वाले भइया लोगों के पास जमा करवा दिये गये। 24 दिसम्बर को बच्चे सुबह 6 बजे से ही खेलकूद प्रतियोगिता की तैयारी में जुट गये थे। इसके लिए आसपास के घरों से ही टेबल, कुर्सी, दरी, सीढ़ी का इंतजाम किया गया। खेल-प्रतियोगिताओं में छोटी कक्षाओं (कक्षा V से VIII) और बड़ी कक्षाओं (कक्षा IX से XII) तक के बच्चों ने बहुत उत्साह से भाग लिया। खासतौर पर फुटबाल का मैच बहुत रोमांचक रहा। दिन में 2 बजे से चित्रकला प्रतियोगिता करवायी गयी। इसमें छोटे बच्चों ने अपनी कल्पना के घोड़े खूब दौड़ाये और उन्हें मनचाहे रंगों से रंग डाला। उन्होंने फूल, कार्टून, पहाड़, नदियों से लेकर प्रदूषण तक पर चित्र बनाये थे।

25 दिसम्बर को सारे बच्चे अपने मम्मी-पापा या दादा-दादी के साथ कार्यक्रम स्थल पर पहुँचे। सबसे पहले फिल्म शो का आयोजन हुआ जिसमें हिन्दी में 'आइस एज' फिल्म दिखायी गयी। इस फिल्म में पशुओं के एनिमेशन द्वारा अच्छे मानवीय गुणों को उभारा गया है। भाग लेने वाले सभी बच्चों को अनुराग ट्रस्ट की ओर से प्रमाणपत्र के साथ-साथ बच्चों की चुनिन्दा अच्छी किताबें पुरस्कार के रूप में दी गयी। पुरस्कार भी एक बच्चे के बुजुर्ग दादा द्वारा दिलवाया गया। पूरे आयोजन का जहाँ एक ओर बच्चों ने जमकर लुत्फ उठाया वहीं कई अभिभावकों ने इस तरह के आयोजनों की महत्ता और सार्थकता को सही बताते हुए इसे निरन्तर करने को कहा। बाल मेले में भाग लेने वाले बच्चों ने कहा कि छुट्टियों की शुरुआत में बाल मेले का आयोजन होने से उनकी छुट्टियों का मजा दोगुना हो गया।

बच्चों के रचनात्मक-सांस्कृतिक मेला

दिल्ली, विगत 31 दिसम्बर 2006 को नववर्ष की पूर्व संध्या पर नौजवान भारत सभा और बच्चा पार्टी ने संयुक्त रूप से एक रचनात्मक-सांस्कृतिक मेला आयोजित किया। इस मौके पर जहाँ बच्चों ने नाटक व गीतों की प्रस्तुति की, वहीं उन्होंने कला प्रतियोगिता व सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

अंकुर एन्क्लेव में एक मैदान पर लगे इस मेले को लेकर बच्चों में सुबह से ही उत्साह था। रंग बिरंगी झण्डियों से पटे मेले में जहाँ एक तरफ क्रान्तिकारियों की स्मृति में फोटों प्रदर्शनी लगी थी, वहीं दूसरी तरफ बच्चों के लिए दुनिया भर की ज्ञानवर्धक पुस्तक-प्रदर्शनी भी थी। कुछ बच्चों ने अपनी पहले पर "रिंग डालो" और "गिलास गिराओ इनाम पाओ" जैसे खेलों के स्टाल भी लगाये थे जिसमें मेले की रौनक और बढ़ गई थी। कला प्रतियोगिता में बच्चों ने "हमारे सपनों का भारत" विषय पर कई आकर्षक चित्र बनाए, साथ ही जाति-धर्म छोड़ कर इंसानी एकता को कायम करते संदेश चित्र भी सराहानीय रहे।

पूरे मेले को सबसे आकर्षक रही बच्चों की "क्विज प्रतियोगिता"। पाँच टीम नियुक्त हुई जिनमें प्रत्यके में छः बच्चें थे टीम के नाम—शहीद भगतसिंह टीम, सुखदेव टीम, राजगुरू टीम, गणेशशंकर विद्यार्थी टीम व चन्द्रशेखर टीम थी।

कई मुश्किल प्रश्नों के बावजूद बच्चों ने एक-दूसरी टीम को अच्छी टक्कर दी। बड़े लोग भी प्रतियोगिता के दौरान बच्चों का उत्साह बढ़ाने के लिए वहीं उपस्थित रहे। अन्त में आखिर सुखदेव टीम ने बाजी मार ही ली। इस टीम में किशन सचिन, शिवानी शामिल थे। बच्चों को अनुराग बाल पत्रिका को पुस्कार के रूप में दी गई।

शाम होते ही लोगों की भीड़ मंच के सामने लग गई, क्योंकि अब शुरू होना था बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम। अपने पहले ही गीत "प्यार बाँटते चलो" में बच्चे ने बड़ों को सीख देते और इंसानियत का पाठ पढ़ाते दिखाई पड़े। वही दूसरे गीत—"यारों यही दोस्ती है" में जिन्दगी में सच्ची दोस्ती पर अपनी भावना प्रकट की। पर सबसे ज्यादा लोगों को गुदगुदाया बच्चों द्वारा मंचित नाटक "सरकारी साण्ड" ने खासकर छोटी बच्ची रिया का मासुमियत से कहना कि "नेता जी आप लोग संसद में रोज गाली देते हो, तो कुछ नहीं, इसने कुछ पूछा तो इतना भड़क उठे" काफी पसन्द किया गया। "कौन गिराये बम बच्चों पर" कविता की नाट्य प्रस्तुति में बच्चों ने युद्ध को प्रेरित करते देशों को ऐसी चीं बुलवाने की बात कहीं। अपने आखिरी सामुहिक गीत "आ गए यहाँ जवाँ कदम..." में बच्चों ने रूढ़ियों को तोड़ते नए कदमों की आहट का आभास कराया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में गिटार पर अभिनव रहे। जबकि मेले का संयोजन नौभास के आशीष ने किया।

—योगेश

आओ कहानी से चित्र बनायें :-

वो बीमार था।

दो डाक्टर आये।

एक ने कहा, गोली खिला दो।

दूसरे ने कहा, कम्बल उढ़ा दो।

अरे! ये तो चिड़िया बन गयी।

एक राजा था। उसके घर में,
खिड़की और दरवाजा था।
उसका एक खजाना था।

सात चोर आये
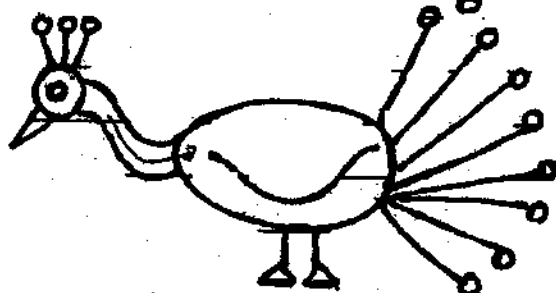
तीन सिपाही घर से दौड़े।
और दो खजाने से।

अरे ये तो चोर नहीं, मोर है।

बूझो तो जानें!

1.
गुलाबी सफेद मेरा रंग
पानी कीचड़ मेरे संग
ना खुश्बू है ना कोई गन्ध
ना मंदिर ना मस्जिद पर
ना चोटी ना गजेर पर,
ना माला गुलदस्ते पर
पाना मुझको नहीं आसान
अलग थलग मेरी पहचान, है मुझको बहुत गुमान
क्या है तुमको थोड़ा भी ज्ञान?
'राष्ट्रीय फूल कहलाने का है सम्मान
बस यही है मेरी पहचान
बस यही है मेरी शान।
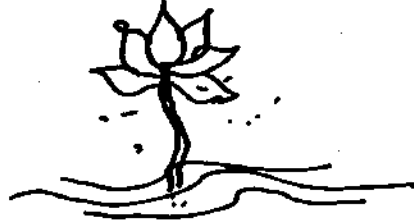
2.
क से कछुआ मेरा नाम,
धीरे चलना मेरा काम।
खरगोश को था खुद पर गर्व,
लगाई उसने दौड़ की शर्त।
आगे निकल कर गया था सो,
घमण्ड में वो गया था खो।
नहीं रुका मैं नहीं रुका
धीमे धीमे चलता ही रहा
थकता गया पर चलता गया
चलता गया मैं चलता गया
खरगोश सोता रहा सोता रहा
आई जब परिणाम की बारी
जीत हो गई मेरी न्यारी।
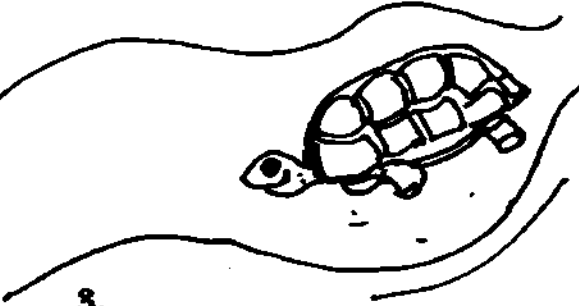
3.
घोड़े सा मैं दिखता हूँ
धीमे धीमे ही चलता हूँ
ना गाड़ी ना सवारी
पीठ पर कपड़े की गठरी भारी
जो कुछ मिले खुशी से खाऊँ
ढेचूँ ढेचूँ की आवाज लगाऊँ
नहीं बँधता सबके घर द्वार
नहीं मिलता सबका प्यार दुलार।

उत्तर : 1. कमल, 2. कछुआ, 3. गधा